



नालको, निगम कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण करते हुए श्री सतेंद्र सिंह, संयुक्त सचिव, खान मंत्रालय, भारत सरकार



वार्षिक साधारण बैठक – 2020 में मंच पर उपस्थित अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री श्रीधर पात्र एवं निदेशकगण



सतर्कता जागरूकता सप्ताह के समापन समारोह में उपस्थित अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री श्रीधर पात्र, मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं निदेशकगण के साथ डॉ. सुधांशु षड़ंगी, भा.पू.से., पुलिस आयुक्त, भुवनेश्वर-कटक



# नालको की हिंदी गृह-पत्रिका जनवरी-2021



श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

### संरक्षक

श्री प्रदीप कुमार मिश्र, निदेशक (वाणिज्य) श्री राधाश्याम महापात्र, निदेशक (मानव संसाधन) श्री एम.पी. मिश्र, निदेशक (परियोजना एवं तकनीकी) श्री बी. के. दास, निदेशक (उत्पादन) श्री सोमनाथ हंसदा, मुख्य सतर्कता अधिकारी

### सलाहकार

श्री जावेद रेयाज़, समूह महाप्रबंधक (औ.अ. एवं अनुपालन)

### संपादक

श्री रोशन पाण्डेय, उप प्रबंधक (राजभाषा)

### सह-संपादक

श्री हिमांशु राय, उप प्रबंधक (राजभाषा), निगम कार्यालय, भुवनेश्वर श्री पवन कुमार त्रिपाठी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), अनुगुळ डॉ. धीरज कुमार मिश्र, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), दामनजोड़ी

# सीमित वितरण हेतु

पत्रिका में छपने वाले विचार लेखक/कवि के निजी हैं, इनसे संस्था या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।



# नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड

(खान मंत्रालयं, भारत सरकार का एक नवरत्न लोक उद्यम) निगम एवं पंजीकृत कार्यालय पी/1, नयापल्ली,भुवनेश्वर-751013 वेबसाईट : http://www.nalcoindia.com ईमेल: javed.reyaz@nalcoindia.co.in

# विषय-सूची

कंप्यूटर - हमारा मित्र	प्रसेनजीत विश्वास	06
उद्योग ४.०	भागवतुला रमेश	07
उच्च उत्पादकता: समय की मांग	हिमांशु राय	11
अहसास	सदाशिव सामन्तराय	13
भारतीय नारियाँ और उनकी साड़ियां	सुमिता सहाय	17
जोखनी की माँ	शगुफ़्ता जबीं	19
क्या पीड़िता दलित है!	स्वाती तिवारी	21
भारतीय संस्कृति का क्षय क्यों हो रहा है?	अप्रमेय परिडा	23
ऐसा कभी सोचा न था !	प्रियदर्शिनी सामन्तराय	24
अगर मैं प्रधानमंत्री होती	रजनी मिंज	25
कौशल विकास – कुशल भारत	निर्मल कुमार राउत	27
भ्रष्टाचार मुक्त भारत	सुप्रिया खोसला	29
कोरोना महामारी: देशभक्ति दिखाने का एक बेहतरीन अवसर	अरविंद कुमार सिंह	31
कोविड काल में महिलाओं का हाल	अखिल कुमार	33
कहना जरूरी है	बि. सुजया लक्ष्मी	34
मेरी प्रिय रचना	फिरदौस परवीन	35
राष्ट्र विकास में युवाओं की भूमिका	सुदेश कुमार पटनायक	36
फूलों के जैसी नारी	बर्नाली अधिकारी	36
कोई देख तो नहीं रहा न	वी. अनुराधा	37
अव्यवस्थित	नादिरा ख़ान	38
घायल सिपाही का संदेश	महेंद्र प्रसाद	38
लिट्टी चोखा - बिहार क्षेत्र का पारंपरिक व्यंजन	प्रियंका सिंह	39



# अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

नया वर्ष, नई-उम्मीदें, नया-विश्वास और इन सबको समेटे, असीम संभावनाओं के साथ अक्षर का वर्ष 2021 का नया अंक आप सभी को प्रस्तुत करते हुए असीम प्रसन्नता हो रही है।

हर बीता हुआ पल आने वाले पल की पृष्ठभूमि होता है, इस पृष्ठभूमि के साथ जीवन अपनी पटरी बदल रहा है और इस बदलाव के साथ सुनहरे कल की झलक भी प्राप्त हो रही है। इस झलक का आधार बनी हमारी जिजीविषा! इसमें कोई संदेह नहीं है कि, पिछले कल में हमने प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए अपनी जीवन-धारा और व्यवसाय दोनों ही क्षेत्रों में आगे बढ़ने का प्रयास किया है। इस वित्तीय वर्ष के प्रारंभ से ही राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में वस्तुओं की मांग भी घटी, कीमतों में भी भारी गिरावट बनी रही, व्यापार निर्यात भी प्रभावित हुआ है, महामारी के मारक असर से गुजरते हुए हमने सुनियोजित योजना एवं परिकल्पना के साथ आगे का रास्ता तैयार किया है। समय के गुजरने के साथ-वैश्विक फलक की स्थिति में भी अब सकारात्मक बदलाव आ रहा है।

सबके साथ मिलकर हर रास्ता आसान हो जाता है। महामारी के दौर में सम्मिलित प्रयास और सहयोग का बेजोड़ उदाहरण हमने प्रस्तुत किया है। समाज, राज्य और देश की सेवा करने में हम आगे-आगे ही रहे हैं। इसी 'हम' भावना का नमूना पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न लेख भी प्रस्तुत करते हैं। यही 'हम' भावना भारतीयता का आधार है। इसी 'हम' भावना से भारतीय भाषा और बोलियों के शब्दों से 'हिंदी' भाषा बनी है। जिस वजह से कोई भी भाषा-भाषी इस भाषा में अपने शब्दों से परिचित हो जाता है। विश्व पटल पर देखें तो विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी की शिक्षा प्रदान किया जाना, वैश्विक पटल पर हिंदी की स्वीकार्यता को रेखांकित करती है। विदेशों में भारत के दूतावास 'विश्व हिंदी दिवस'को विशेष रूप से मनाते हैं। यह वैश्विक स्तर पर भारत की भाषा के प्रति हमारे एकात्म होने का भी उदाहरण प्रस्तुत करती है।

राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति सकारात्मकता से आगे बढ़ते हुए पत्रिका प्रकाशन एक महत्वपूर्ण पक्ष है। रचनाकारों द्वारा की गई प्रस्तुति राजभाषा कार्यान्वयन में उनका योगदान है। इसी तरह राजभाषा हिंदी में अपने दैनिक कार्यों को करते हुए हम भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की तरफ आगे बढ़ सकते हैं। निर्धारित लक्ष्य की संपूर्ण प्राप्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति का सहयोग अपेक्षित भी है और आवश्यक भी। हम सभी अपने प्रत्येक लक्ष्य को सहजता से प्राप्त कर सकें; इसी अभिलाषा एवं विश्वास के साथ- 'अक्षर' का वर्तमान अंक आप सभी को सौंपते हुए, मैं नव-वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ। अंत में यही कहूँगा –

जो बसे हैं वे उजड़ते हैं, प्रकृति के जड़ नियम से, पर किसी उजड़े हुए को, फिर बसाना कब मना है, है अँधेरी रात पर दीआ जलाना कब मना है।

(श्रीधर पात्र)



राधाश्याम महापात्र निदेशक (मासं) Radhashyam Mahapatro Director (HR)



प्रिय पाठकों.

10 जनवरी, विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर हमारी गृह पत्रिका अक्षर का यह अंक आपको सौंपते हुए मुझे असीम हर्ष की अनुभृति हो रही है। पिछले कुछ समय से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हमने एक दूसरे से हाथ मिलाते हुए, एक दूसरे का साथ देतें हुए जिस रहता से कार्य किया. वह काबिल-ए-तारीफ़ है। अपनी रह इच्छाशक्ति के कारण हमनें प्रतिकृत परिस्थितियों को अवसर में बदला और अब धीरे-धीरे सबकुछ पटरी पर लौट रहा है। अपने संयंत्र के साथियों को मैं चंद पक्तियाँ भेंट करना चाहँगा -

> "प्रतिकृत रहीं धाराएँ पर हम अडे रहे. योद्धा बन कर्तव्य पथ पर खडे रहे।"

कोरोना-योद्धा के रूप में हमने भी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने में राष्ट्र को बनाए रखने में जो अपना तन-मन-धन से जो योगदान दिया, उसकी कोई तुलना नहीं कर सकते। वस्तुत: राष्ट्र की संकल्पना ही भाषा और संस्कृति पर टिकी है। हमारी संस्कृति हमारे विचारों का द्योतक है और भारतीय संस्कृति तो "वसधेव कृटम्बकम" की संकल्पना पर ही टिकी है। हमने तो पूरे विश्व को अपना परिवार माना है, इसी कारण किसी भी परिस्थिति में अपने राष्ट्र के साथ-साथ संपूर्ण धरा की सेवा करने से भारतीय जनमानस कभी भी पीछे नहीं रहता।

इसी विचारों के संवाहक संस्कृति से ही एक राष्ट्र के रूप में विविध भाषाओं को जोड़ते हुए विविध रीति-रिवाज़ों के मध्य तारतम्य स्थापित करते हुए हमारी राजभाषा हिंदी अनेकता में एकता स्थापित करती है। हम बहुभाषी होते हुए भी अपनी भाषाओं को हिंदी के सूत्र में एक दूसरे से जुड़ा हुआ पाते हैं।

वस्तुत: विश्व हिंदी दिवस की संकल्पना ही पूरे विश्व में हिंदी के प्रचार प्रसार करने से है और भाषा का प्रचार अपने संस्कृति के प्रचार के साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। जैसे जैसे हम विश्व गुरू के रूप में स्थापित होंगे वैसे-वैसे ही हमारी भाषाओं का भी प्रचार होगा। इसी कारण से हमारा प्रयास सदैव उत्कष्टता को प्राप्त करने की दिशा में होना चाहिए। चाहे वह उत्पादन के मामला हो या संसाधनों के समुचित प्रयोग का।

मुझे प्रसन्नता है कि "अक्षर" के माध्यम से हम राजभाषा के प्रचार प्रसार तथा कार्यान्वयन हेत् सकारात्मक दिशा में अग्रसर हैं। मैं आप सब को अपनी लेखनी के माध्यम से, अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने विचारों के आदान-प्रदान हेत् आमंत्रित करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि आगामी अंकों में अन्य विभागों के उत्कृष्ट अनुभवों से भी हमारा परिचय इस पत्रिका के माध्यम से बढेगा।

धन्यवाद.

राधाश्याम महापात्र

निदेशक (मानव संसाधन)

नेशनल एल्युमिनियम कम्पनी लिमिटेड National Aluminium Company Limited

निगम कार्यालय

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Government of India Enterprise) CORPORATE OFFICE

तालको भवर, पी-1, नगायल्ली, भुवरोहवर-751 013, भारतः NALCO BHAVAN, P/1, Nayapalli, Bhubaneswar-751 013, India

मी Phone: 0674-2300430 (Off.), केंबर FAX: 0674-2301751, ई-मेल Mail: dirtriginal coind, radhashyam mahapatro@nalcoindia.co.in CN: L272030R1981G0000920

हर एक पल अपने आप में बीते एवं आने वाले समय का केंद्र बिंदु होता है। इसलिए जरूरी है कि, बीते और आने वाले पलों के बारे में न सोचकर वर्तमान पर ध्यान केंद्रित किया जाए; और किये पर पछतावे के साथ भविष्य की चिंता से भी बचा जाए।

यही प्रयास व्यक्ति, समाज, देश और मानव जाति के उद्धार का आधार साबित होता है। वर्तमान को संवारने की कोशिश ही हमारे बूते की बात होती है। जब िक, उसपर हम अमूमन सबसे कम ध्यान देते हैं। हम अकसर भूल जाते हैं िक, हमारा आज किया गया प्रयास ही हमारे आने वाले कल के लिए रास्ता तैयार करता है। इसी विचार के साथ अक्षर का वर्तमान अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता महसूस हो रही है। जो समय के साथ चलकर, समय-जीवी नहीं समय-जयी हो रहा है। इसे ऐसा बनाने में सभी संबंधितों की विशेष भूमिका है। हम सभी के सम्मिलित प्रयास से ही यह साकार हुआ। इस अंक का आकार भी कई विभिन्न रचनाओं के मिलकर पूरा हुआ है। जिसमें दैनिक प्रयोग से लेकर कार्यालय-उद्योग- मानव-जाति की परवाह-समाज के प्रति सकारात्मक सोच-नारी के प्रति सचेतनता-वर्ग भावना का विरोध-देश के प्रति फ़र्ज और स्वाद तक की सोच मुखर हुई है।

मुखर होकर ही हम बदलाव को बल दे सकते हैं। बदलाव अच्छे के लिए, भलाई के लिए, उद्धार के लिए, संपन्नता के लिए, समानता के लिए। हमें सोचना चाहिए कि, बदलाव का हिस्सा बनना एक बात है और बदलाव का गवाह बनना दूसरी। बिना अनुभव के हम आवश्यकता को महसूस कई बार नहीं कर पाते हैं। आज देखिए "दो गज़ दूरी-मास्क जरूरी" इसी अनुभव से उपजी आवश्यकता है; जो हमारा जीवन-कवच बना। हमें यह स्वीकार करना होगा कि, "खूबी और खामी हर इंसान में दोनों ही होती है, जो तराशता है उसे खूबी नज़र आती है; और जो तलाशता है उसे खामी नजर आती है।"

चिलए तराशते हैं और उभारते हैं अपनी खूबी को, अपने अपनों की खूबी को, अपने समाज, देश, मानव-जाति की खूबी को। इस नए वर्ष की असीम संभावनाओं में, हम सुबह की नई रोशनी में, हर पल के नए एहसास में और पूरी करते हैं धरती के स्वर्ग बनने की प्रक्रिया को...

नव-वर्ष की हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाओं के साथ "अक्षर" आपके सम्मुख...

> **रोशन पाण्डेय** उप प्रबंधक (राजभाषा)





# कंप्यूटर - हमारा मित्र

# प्रसेनजीत विश्वास

"कंप्यूटर" आज इसे किसी परिभाषा की जरूरत नहीं है। कंप्यूटर, स्मार्ट फ़ोन एवं इंटरनेट ने हमारी ज़िंदगी को बहुत सरल कर दिया है और कोविड-19 जैसी महामारी ने इसके महत्व को और बढ़ा दिया है। आइए जानते हैं, इससे जुड़ी कुछ बातें जो आपके और परिवार के लिए उपयोगी होंगी।

- अपने महत्वपूर्ण ऑनलाइन एकाउंट्स को सुरक्षित रखें। कठिन पासवर्ड चुने एवं किसी को ना बताएँ। अधिक सुरक्षा के लिए OTP-आधारित प्रमाणीकरण तथा मोबाइल में फिंगरप्रिंट लॉगिन का जरुर चयन करें।
- सार्वजनिक कंप्यूटर पर अपने ई-मेल, बैंकिंग तथा निजी एकाउंट्स लॉगिन करते वक्त पासवर्ड ना सहेजें। काफ़ी बेहतर होगा यदि वेब ब्राउज़र के गुप्त टैब का इस्तेमाल करें जो
- 3. अपने निजी कंप्यूटर पर टोटल इंटरनेट सिक्योरिटी सॉफ्टवेयर जिसमे एंटी वायरस एवं एंटी मालवेयर दोनों होते हैं, उनको इंस्टॉल करें। नियमित रूप से सॉफ्टवेयर अपडेट करें।
- 4. वास्तविक सॉफ्टवेयर का ही प्रयोग करें। नकली सॉफ्टवेयर से वायरस एवं डाटा चोरी होने की सम्भावना रहती है।
- 5. अपने बच्चे को कंप्यूटर का सही प्रयोग सिखाए। आजकल उनकी ऑनलाइन कक्षा होती है जिसके कारण इंटरनेट का उपयोग बढ़ गया है। ऐसे में पैरेंटल कण्ट्रोल सॉफ्टवेयर इंस्टॉल करें, जिससे अनुचित वेबसाइटें निषिद्ध की जा सकती हैं तथा आप उनकी ऑनलाइन गतिविधियों पर नज़र रख सकते हैं।

- सोशल मीडिया का व्यक्तिगत और व्यवसायी जीवन में सही उपयोग करने से आपको बहुत जानकारी मिल सकती है । वर्तमान परिस्थिति में अत्यंत आवश्यक है कि हम जिम्मेदार बनें और गलत सूचना ना फैलाएं।
- 6. कोरोना काल में सरकार द्वारा ऑनलाइन माध्यम से घर से कामकाज (WFH), ई-लर्निंग एवं आभासी मीटिंग्स को प्रचलित किया जा रहा है । इस सुविधा का सही लाभ उठाएँ और अनावश्यक बाहर ना जाए।
- 7. नियमित रूप से कंप्यूटर पर कामकाज करने पर अपने स्वास्थ्य का विशेष रूप से ख्याल रखें। मोबाइल में नाईट / डार्क मोड का प्रयोग करें। Pomodoro Technique अपनाए, जिसमें 25 मिनट काम और 5 मिनट का विराम लें और उसमे आँख, गरदन, हाथ, पीठ का व्यायाम करें।

मैं उम्मीद करता हूँ कि आप कंप्यूटर को अपना मित्र समझेंगे। आजकल अधिकतर जरूरी गतिविधियाँ ऑनलाइन हो गयी हैं। ऐसे में इसकी उपयोगिता एवं प्रयोग जितना जानेंगे उतना ही आपका मानसिक डर दूर होगा। इंटरनेट पर सावधानी बरतें और कुछ भी क्लिक करने से पहले स्क्रीन पर लिखा हुआ जरूर पढ़ें। कोरोना के विरुद्ध लड़ाई में सोशल डिस्टेन्सिंग बहुत महत्वपूर्ण है और सूचना प्रौद्योगिकी (IT) उपकरण एवं माध्यम इसका पालन करने में सबसे प्रभावशाली हैं।

> उप प्रबंधक (सिस्टम) निगम कार्यालय, भुवनेश्वर





# उद्योग 4.0

# भागवतुला रमेश

### ।. परिचय:

उद्योग 4.0 से पहले, तीन औद्योगिक क्रांतियाँ थीं जिनके कारण विनिर्माण क्षेत्र के प्रतिमान में बदलाव आया है; जैसे - जल और वाष्प शक्ति के माध्यम से मशीनी-करण, सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके असेम्बली लाइनों एवं स्वचालन आदि में बड़े पैमाने पर उत्पादन। जब कि, आज भी पहली औद्योगिक क्रांति की उत्पत्ति का पता ब्रिटेन में लगाया जा सकता है।

1780 के दशक के आसपास उद्योग 1.0 की शुरूआत हुई जब पानी और वाष्प की शक्ति के परिचय से यांत्रिक उत्पादन को मदद मिली और इससे कृषि क्षेत्र का सुधार भी वृहद रूप से संचालित हुआ। कृषि समूहों के औद्योगिक शहरी परिदृश्यों, विशेष कर कपड़ा उद्योगों में खास प्रयोजनों के लिए मशीनों और कारखानों के नियोजित होने से आए बदलाव से इस क्रांति को और भी हवा मिली।

20 वीं शताब्दी में प्रमुख प्रौद्योगिकी चालक के रूप में बिजली के साथ उद्योग 2.0 शुरू हुआ। इस अविध को, सामान्य रूप से बड़े पैमाने पर होने वाले उत्पादन को प्राथमिक उत्पादन के रूप में पेश किया गया। इस दौरान इस्पात के बड़े पैमाने पर उत्पादन ने रेलवे को औद्योगिक प्रणाली में लाने में मदद की, जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर उत्पादन में योगदान मिला, कारखाने के डिजाइन, आपूर्ति श्रृंखला और कारखाने के संचालन जैसी बुनियादी अवधारणाओं को बढ़ावा मिला।

इलेक्ट्रॉनिक्स और औद्योगिक पैमाने पर ऑटोमेशन (स्वचलन) के साथ 1970 के दशक के अंत में उद्योग 3.0 की शुरुआत हुई। डिजिटल क्रांति का आगमन हुआ, जो कि उद्योग 1.0 और 2.0 की तुलना में अधिक परिचित है, क्योंकि आज के अधिकांश लोग उत्पादन में डिजिटल प्रौद्योगिकियों की निर्भरता से परिचित हैं। यह वह युग भी था, जिसमें सर्वर, डेटाबेस और नेटवर्क जैसे कंप्यूटिंग सिस्टम और सैप

(SAP), ओरेकल (ORACLE) और माइक्रोसॉफ्ट (MICROSOFT) के विशेष उद्यम संसाधन नियोजन सॉफ्टवेयर ने विनिर्माण के क्षेत्र में प्रवेश किया।

अब, पूरे विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र को बदलने की क्षमता के साथ डिजिटल और उभरती प्रौद्योगिकियों के नेतृत्व में विनिर्माण क्षेत्र में एक नए दौर की शुरूआत हुई, जिसे उद्योग 4.0 कहा जाता है।

उद्योग 4.0 को कंपनी के प्रत्येक भाग के डिजिटलीकरण और स्वचालन के साथ-साथ विनिर्माण प्रक्रिया द्वारा समग्र परिवर्तन के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह उद्योग में स्व-अनुकूलन, आत्म-अनुभूति और आत्म-अनुकूलन को शुरू करने से संभव हो सका है। इससे निर्माता कंप्यूटर को संचालित करने के बजाए उनके साथ संवाद करने में सक्षम होंगे। उद्योग 4.0 कम लागत पर उच्च गुणवत्ता के सामान का उत्पादन करने के लिए तेजी से, अधिक लचीले और अधिक कुशल प्रक्रियाओं को सक्षम करते हुए, मशीनों से डेटा को संग्रहित करने के साथ उनका विश्लेषण करना भी संभव बना देगा।

उद्योग 4.0 की विशेषता है- अत्यधिक बुद्धिमान कनेक्टेड सिस्टम, जो पूरी तरह से डिजिटल मूल्य श्रृंखला बनाते हैं। यहाँ, उद्देश्य यह है कि मशीनें अन्य मशीनों और उत्पादों से बात करती हैं और संबंधित जानकारी वास्तविक समय में संसाधित और वितरित की जाती है। औद्योगिक क्रांतियों के अवलोकन को चित्र 1 में योजनाबद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया है।

# ।।. आइए उद्योग 4.0 को समझें:

2011 में, जर्मनी ने हनोवर फेयर इवेंट में उद्योग 4.0 पेश किया, जो औद्योगिक क्रांति के एक नए युग के आगमन का प्रतीक है। जब पहली बार इस विचार को प्रस्तुत किया गया था, तो यूरोपीय निर्माण शोधकर्ताओं और कंपनियों द्वारा इसे स्वीकारने के लिए व्यापक प्रयास किए गए थे। इस





परियोजना या अवधारणा में उनकी रुचि इस कारण रही कि, उद्योग 4.0 से उत्पादन अधिक कुशल और कम खर्चीला हो जाएगा।

उद्योग 4.0 सभी बेहतरीन, लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं, कारखानों और वितरण मॉडल के इस्तेमाल से जुड़ा है जहाँ मशीनें, मशीनों और परिचालकों के बीच अधिक से अधिक आँकड़ों का संग्रहण एवं संचार करती हैं। इन सबका उद्देश्य लागत को कम करते हुए व्यवसायों को त्वरित और बेहतर निर्णय लेने में सक्षम बनाना है। बदले में यह विनिर्माण उत्पादकता में वृद्धि करेगा, अर्थव्यवस्था को गतिमान करेगा, औद्योगिक विकास में तेजी लाएगा, और कार्यबल के प्रोफाइल में अपेक्षित सुधार करेगा - अंततः कंपनियों और क्षेत्रों की प्रतिस्पर्धात्मकता को बदल देगा।

# उद्योग 4.0 को स्वीकारने के लिए संगठनों की तत्परता

इसे समझने के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि पहले दो आयाम (स्मार्ट फैक्ट्री और स्मार्ट उत्पाद) भौतिक दुनिया से संबंधित हैं, जबिक अन्य दो आयाम (स्मार्ट संचालन और डेटा संचालन सेवाएं) भौतिक आयामों के मौजूदगी का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस अवधारणा के अनुसार, उद्योग 4.0 को भौतिक और आभासी दुनिया का मिला हुआ स्वरूप कहा जा सकता है। स्वीकार्यता मॉडल के छह घटक नीचे दिए गए हैं-

# 1. रणनीति और संगठन

उद्योग 4.0 डिजीटल प्रौद्योगिकियों के उपयोग के माध्यम से वर्तमान प्रक्रियाओं में सुधार के अलावा पूरी तरह से नए व्यापार मॉडल विकसित करने के लिए एक नया अवसर प्रदान करता है। वर्तमान खुलेपन और सांस्कृतिक सामंजस्य की जाँच निम्न मानदंडों का उपयोग करके की जा सकती है -

- उद्योग ४.० का मौजूदा ज्ञान रणनीति कार्यान्वयन
- बेहतर संचालन के लिए संकेतकों की एक प्रणाली के माध्यम से रणनीतियों की समीक्षा
- उद्योग 4.0 से संबंधित उद्यम निवेश का आकलन
- प्रौद्योगिकी और नवाचार प्रबंधन के उपयोग की समझ
- अनुसंधान और विकास के वर्तमान स्थिति की समझ

# छह आयामी प्रतिमान उद्योग 4.0 की वर्तमान समझ के अनुसार उद्यमों की तत्परता को नीचे दिये गए छह पहलुओं के माध्यम से समझा जा सकता है। रणनीति व संगठन स्मार्ट कारखाने स्मार्ट परिचालन स्मार्ट उत्पाद ठ डेटा संचालित सेवाएं कर्मचारी

# 2. स्मार्ट फैक्ट्री

स्मार्ट फैक्ट्री एक उत्पादन वातावरण है, जिसमें उत्पादन प्रणाली और रसद प्रणाली मुख्य रूप से मानव हस्तक्षेप के बिना खुद को व्यवस्थित करते हैं। यह साइबर फिजिकल सिस्टम (CPS) पर निर्भर करता है जो आईटी (IT) इन्फ्रास्ट्रक्चर / आईओटी (IOT) के माध्यम से संचार करके भौतिक और आभासी दुनिया को जोड़ता है। स्मार्ट कारखाने



के क्षेत्र में एक कंपनी की प्रगति को निम्नलिखित चार मानदंडों का उपयोग करके मापा जा सकता है:

- डिजिटल मॉडलिंग
- उपकरण / घटक अवसंरचना
- डेटा उपयोग
- आईटी सिस्टम / बुनियादी ढांचा

### 3. बेहतर संचालन

उत्पादन की तकनीकी आवश्यकताएँ और इसकी योजना, जो कि कार्य के स्व-नियंत्रण को समझने के लिए आवश्यक हों, को स्मार्ट संचालन के रूप में जाना जाता है। उद्योग 4.0 बेहतर संचालन की तत्परता को निम्नलिखित द्वारा समझा जा सकता है -

- जानकारी साझाकरण
- क्लाउड यूजेज
- आईटी सुरक्षा
- स्वायत्त प्रक्रिया

# 4. बेहतर उत्पाद

स्मार्ट उत्पाद 'स्मार्ट कारखाने' और 'स्मार्ट परिचालन' की नींव हैं और एक एकीकृत 'स्मार्ट कारखाने' का महत्वपूर्ण घटक हैं जो स्वचालित, लचीले और कुशल उत्पादन की सुविधा प्रदान करते हैं। भौतिक घटक तकनीकी घटकों, जैसे - सेंसर, संचार इंटरफेस आदि से सज्जित हैं ताकि वे अपने पर्यावरण और अपनी स्थिति पर डेटा एकत्र कर सकें। बेहतर उत्पाद के क्षेत्र की तत्परता का निर्घारण इस बात से होता है कि, उत्पाद कितना बेहतर कार्य करते हैं और किस स्तर तक इस्तेमाल होने वाले ऑकड़ों का विश्लेषण कार्य करते हैं।

# 5. डेटा संचालित सेवाएं

ग्राहक की सुविधाओं को बढ़ाने के उद्देश्य से भविष्य व्यापार के साथ समायोजन करते हुए कंपनियों द्वारा उत्पाद की बिक्री से लेकर समाधान प्रदान किए जाने तक के लिए आंकड़ों के संचालित सेवाओं का प्रयोग किया जा रहा है। एंटरप्राइज़ वाइड इंटिग्रेशन पर निर्भरता व संग्रहित आँकड़ों के मूल्यांकन एवं विश्लेषण पर ही बिक्री के बाद सेवा निर्भर करती है। भौतिक उत्पादों को स्वयं में भौतिक आईटी से सिक्जित होना आवश्यक है तािक वे परिचालन प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक जानकारी को भेज, प्राप्त कर सकते हैं, या आवश्यक जानकारी का पता लगा सकें। इस क्षेत्र में तत्परता निम्नलिखित तीन मानदंडों का उपयोग करके निर्धारित की जा सकती है:

- इन सेवाओं की उपलब्धता
- प्राप्त राजस्व का हिस्सा
- उपयोग किए गए डेटा का हिस्सा

### 6. कर्मचारी

कर्मचारी अपने डिजिटल परिवर्तन का एहसास करने में कंपनियों की मदद करते हैं। इस आयाम में वास्तविक रूप से कर्मचारी के वर्तमान कौशल का विश्लेषण और नए कौशल प्राप्त करने की क्षमता का निर्धारण किया जा सकता है क्योंकि एक संगठन में तकनीकी के परिवर्तनों से कर्मचारी सबसे अधिक प्रभावित होते हैं; यह सीधे उनके काम के माहौल पर असर डालता है। इसके लिए उन्हें नए कौशल प्राप्त करने की आवश्यकता होती है तािक, वे डिजिटल कार्यस्थल जुड़ सकें। इस प्रकार, उपरोक्त मॉडल विभिन्न आलोचकीय मापदंडों पर कंपनी की तत्परता का आकलन करने और संभावित अंतराल का विश्लेषण करने में मदद करता है जिसे उद्योग 4.0 को अपनाने के लिए हािसल करने की आवश्यकता है।

### IV. उद्योग 4.0 का कार्यान्वयन

उद्योग 4.0 को अपनाना कोई रुचि नहीं है। यह हर उद्योग के लिए जरूरी है। यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जो निर्माता उद्योग 4.0 को लागू कर सकते हैं:

- क) स्पष्ट रोडमैप: उद्योग 4.0 को अपनाने के लिए, अंतरालों का विश्लेषण, क्षमताओं का निर्धारण करने के लिए एक स्पष्ट रूप से परिभाषित योजना, की आवश्यकता है।
- ख) छोटी शुरूआत: समर्पित क्रॉस-फंक्शनल टीमों, परिचालन व आईटी के साथ व्यवसाय की छोटी शुरूआत करें और परियोजना के सुदृढ़ होने के साथ इसे बढ़ाएँ।
- ग) प्रतिभा विकास: एक योग्य और कुशल कार्यबल नई प्रौद्योगिकियों को जल्दी से लागू करने में मदद करेगा। कम लागत वाले विनिर्माण पर भारत की निर्भरता को देखते हुए मौजूदा कार्यबल को बनाए रखने और फिर से तैयार करने के लिए विशेष रूप से जोर देने की आवश्यकता है।
- घ) ग्राहक पहले: किसी भी निर्माता के लिए अंतिम लक्ष्य एक उत्पाद या सेवा प्रदान करना है जो ग्राहकों की



अपेक्षाओं को पूरा करता है या उससे अधिक है। अनुसंधान व विकास से ग्राहक, ग्राहक से आपूर्ति श्रृंखला, आपूर्ति श्रृंखला से मूल्य श्रृंखला और इन सबसे परे इनके सम्मिलित मेल से उद्योग 4.0 को लागू करने में मदद मिलेगी साथ ही इसके स्वीकरण को तेज भी किया जा सकेगा। स्टार्ट-अप्स, विश्वविद्यालयों या उद्योग संगठनों के साथ काम करना भी लाभप्रद होगा।

### v. उद्योग 4.0 से लाभ

वैश्विक स्तर पर दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धा के निर्माण के अलावा, विनिर्माण क्षेत्र में उद्योग 4.0 को अपनाने से महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

पहला, यह निर्माताओं को उत्पादकता, दक्षता, सुरक्षा और प्रदर्शन में सुधार करने में सक्षम बनाएगा और भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करेगा। उदाहरण के लिए- विनिर्माण विधियों, प्रक्रियाओं और उपकरणों में प्रौद्योगिकी के प्रयोग से कंपनियाँ उत्पादन प्रक्रिया को शुरू से अंत तक ट्रैक करने, मशीनों में डेटा का विश्लेषण करने और कच्चे माल की उपलब्धता, उपकरण की स्थिति आदि पर वास्तविक समय की प्रतिक्रिया प्राप्त करने में सक्षम होंगी, जिसके परिणामस्वरूप न्यूनतम लागत पर कुशल प्रक्रिया व उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद प्राप्त होंगे।

दूसरा, लघु और मध्यम उद्यम (एसएमई), जो भारतीय विनिर्माण की रीढ़ बनाते हैं, उद्योग 4.0 के तकनीकों का लाभ उठाकर दक्षता, उत्पादकता में वृद्धि, कम-लागत और कम-जोखिम को हासिल कर सकते हैं। जितनी जल्दी वे आधुनिक व्यावसायिक जरूरतों को पूरा करने के लिए विकसित होते हैं, उतना ही वे वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक और सुरक्षित नए व्यवसाय को बनाए रखेंगे।

तीसरा, नियोक्ता अपने कार्यबल के कौशल को बढ़ाने में सक्षम होंगे। जबिक कुछ नौकरियाँ खो सकती हैं, पर नए लोग नई अर्थव्यवस्था का सृजन करेंगे। नई तकनीकी को विशेष रूप से संज्ञानात्मक रोबोटिक्स, उन्नत स्वचालन और औद्योगिक सूचना संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में स्वाभाविक ही नए कौशल और प्रशिक्षित उद्योग 4.0-तैयार कार्यबल की आवश्यकता होती है।

अंत में, उद्योग 4.0 भारतीय विनिर्माण को एक उन्नत-नेतृत्व वाले और उच्च-मूल्य विनिर्माण चरण में बदलने के लिए एक मार्ग प्रदान कर सकता है।

# VI. भारत के लिए फायदे

विभिन्न देश और अर्थव्यवस्थाएँ अपनी गति और ताकत के दम पर उद्योग 4.0 में स्थानांतिरत करने का सिलिसला जारी रखे हुए हैं। वास्तव में, परिपक्व होती तकनीकों की घटती लागत इस परिवर्तन को आसान बना रही है। कम कंप्यूटिंग लागत, सस्ता भंडारण और कम खर्चीला बैंडविड्थ कंपनियों के लिए कम निवेश के साथ डिजिटल प्रौद्योगिकियों के लाभों को प्राप्त करना संभव बना रही हैं। जो कंपनियां इन क्षमताओं को विकसित करने में विफल रहती हैं, वे लंबी अविध में अपनी प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त बनाए रखने के लिए संघर्ष करेंगी।

जैसे कि भारत विनिर्माण-नेतृत्व विकास का पीछा करता है, उसे अपने प्रतिस्पर्धी बढ़त को बढ़ावा देने के लिए उद्योग 4.0 को गले लगाने की वैश्विक प्रवृत्ति के साथ तालमेल करने और कम लागत वाले विनिर्माण से दूर हटने की आवश्यकता है।

जबिक सरकार ने उद्योग 4.0 को अपनाने को प्रोत्साहित करने के लिए मेक इन इंडिया, स्मार्ट सिटीज, डिजिटल इंडिया और स्किल इंडिया जैसी कई शुरूआत किये हैं, इसे और अधिक सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की जरूरत है। उदाहरण के लिए, औद्योगिक समूहों को प्रोत्साहित करने और समर्पित वित्तपोषण विकल्प उपलब्ध होने से निर्माताओं को, विशेष रूप से एसएमई को, उद्योग 4.0 के कार्यान्वयन में तेजी लाने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही <mark>साइ</mark>बरसिक्यूरिटी, डे<mark>टा इंटीग्रि</mark>टी और आईओटी सुरक्षा <mark>निर्दे</mark>श संबंधित अन्य <mark>महत्तवपूर्ण</mark> क्षेत्र में शामिल हैं। शिक्षित प्रतिभा की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना भी <mark>प्राथ</mark>मिकता का पहलू <mark>बनना</mark> चाहिए। अंत में, विभिन्न हितधारकों - शिक्षा, सार्वजनिक और निजी उद्योग, और सेवा प्रदाताओं के बीच एक अधिक सहयोगी प्रयास - इस नई प्रौद्योगिकी के तेजी से प्रसार के लिए महत्वपूर्ण होगा।

एक नवोन्मेषी दृष्टिकोण के साथ, भारत विकास के नए चरणों को विकसित करने में सक्षम होगा, विकास के एक नए युग में प्रवेश करेगा और अपनी आर्थिक भलाई को बनाए रखेगा।

> वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना) निगम कार्यालय, भुवनेश्वर





# उच्च उत्पादकता: समय की मांग

# हिमांशु राय

जब भी हम उत्पादकता के बारे में विचार करते हैं तो हमारे जेहन में सबसे पहले व्यवसाय तथा उसके लागत संबंधी विचार आते हैं। व्यवसाय मुख्यत: दो घटकों से प्रभावित होता है –

# (i) आंतरिक घटक तथा (ii) बाहरी घटक

आंतरिक घटकों में व्यवसाय की संरचना, आकार, कम्पनी की नीतियों तथा अंतिम रूप से उत्पादित उत्पादों की मुख्य भूमिका होती है, वहीं बाहरी घटकों में जनसंख्या, पर्यावरण, भौगोलिक स्थितियों, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवहारों, विधिक व तकनीकी इत्यादि सभी घटकों का प्रभाव पडता है। किसी भी उत्पाद की लागत इन सभी घटकों पर निर्भर करता है। जैसे – यदि किसी देश की जनसंख्या अधिक है, तो उस देश में बाजार की सम्भावनाएं अधिक होंगी। इसी प्रकार कम जनसंख्या वाले देश के व्यवसायी अपने उत्पादों व सेवाओं हेतु देश के बाहर अपने व्यवसाय की सम्भावनाओं को तलाशने हेत बाध्य होंगे। इसी प्रकार बाह्य आर्थिक नीतियों – राजकोषीय नीति, मौद्रिक नीति, विदेश नीति आदि का भी प्रभाव व्यवसाय पर पडता है। इसी प्रकार भौगोलिक व पर्यावरणीय प्रभावों से व्यवसाय के उत्पादन लागत का सीधा प्रभाव पड़ता है। सरकार की विधिक नीतियों से व्यवसाय करना कठिन या आसान हो सकता है।

लागत से तात्पर्य किसी उत्पाद के उत्पादन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि किसी कम्पनी द्वारा उत्पाद के उत्पादन, विकास तथा विभिन्न संसाधनों के प्रयोग से प्रयोगकर्ता तक पहुँचाना है। फैक्ट्री की अभिकल्पना इंग्लैण्ड के औद्योगिक क्रांति से शुरू होकर आज के प्रतिद्वंदी युग में पहुँच गयी है।

आज के तकनीकी युग में मानव श्रम का कम से कम इस्तेमाल करके अधिक से अधिक उत्पादन के माध्यम से लागत में कमी की जा रही है। आज लाभ का प्रतिशत कम हो गया है तथा प्रत्येक कम्पनी के लिए अपना अस्तित्व बनाए रखने हेतु एकमात्र विकल्प अधिक से अधिक उत्पादन करना ही है। किंतु मात्र उत्पादन द्वारा ही अस्तित्व बरकरार रखना सम्भव नहीं है। इसके साथ ही साथ व्यवसाय को समय के अनुसार बदलना भी पड़ता है। नालको द्वारा विगत दिनों में नए-नए उत्पाद (फैन ब्लैड, मैकेनाइज्ड सॉ, फॉयल स्टॉकआदि) के माध्यम से उत्पादों में विविधीकरण इसका उचित उदाहरण है।

लागत में कमी लाने के लिए मात्र व्ययों में कमी लाना ही पर्याप्त नहीं है। इस हेतु अपने रणनीतिक व परिचालन क्षमताओं में मौलिक परिवर्तन भी लाना अनिवार्य है। इस हेतु अपने हितधारकों व ग्राहकों के मांग के अनुसार निर्धारित समय में उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में कहें तो हमारा फोकस लागत में कमी की बजाए अपने उत्पाद के मूल्यवर्धन पर रखना होता है। अर्थात जिस मूल्य पर हम अपना उत्पाद बाजार में बेच रहे हैं, हमारे उत्पाद में उससे अधिक की गुणवत्ता होनी चाहिए।

लागत का सबसे प्रमुख भाग मानव संसाधन होता है। अर्थात कर्मचारियों के ऊपर किया जाने वाला व्यय लागत का बड़ा भाग होता है। इस हेतु हमारा दायित्व है कि अपने कर्मचारियों के मध्य स्वामित्व (ओनरिशप) का भाव अवश्य होना चाहिए। प्रत्येक कर्मचारी यदि कम्पनी को अपनी स्वयं की कम्पनी मानते हुए एक भी रुपया खर्च करने से पहले उसके सदुपयोग पर विचार करें तो अवश्य ही लागत में बड़ी कमी लायी जा सकती है।

उत्पादन लागत में कमी लाने के दो अन्य विकल्प हैं –

- कम व्यय (कम संसाधनों के प्रयोग से समान उत्पादन)
- अधिक उत्पादन (समान संसाधनों के प्रयोग से अधिक उत्पादन)

उपरोक्त दो पर गहनता पूर्वक विचार करने पर हम देखते हैं कि कम व्यय की सीमा शून्य भी हो सकती है, जो किसी भी उत्पादन का अंतिम बिंदु हो सकता है। अर्थात उत्पादन



प्रक्रिया ठप पड़ सकती है। वहीं दूसरे बिंदु की कोई सीमा नहीं है तथा यह मानव संसाधनों के साथ – साथ अधिकाधिक उत्पादन पर जोर डालता है।

अधिक उत्पादन के कड़ी में लागत कम करने हेतु आवश्यक है कि अवांछित सह उत्पादनों का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए व्यर्थ पदार्थों का भी प्रयोग किया जाए। नालको द्वारा फ्लाई एश ईटों का निर्माण, अधिभार (ओवरबर्डन) द्वारा खान के ऊपरी परत का इस्तेमाल करते हुए खनित क्षेत्र को पुन: भरना इत्यादि ऐसे कार्य किए जा रहे हैं। इस संबंध में यह भी ध्यान देना आवश्यक है कि अनुसंधानात्मक गतिविधियों पर किया जाना वाला व्यय भी ऐसे सह उत्पादनों के कुशल प्रयोग को बढ़ाता है। इसमें उल्लेखनीय है कि हमारी कम्पनी द्वारा पर्याप्त अनुसंधान कार्य हेतु विशेष एकक की स्थापना की गयी है। जिसके माध्यम से हम अपने अवांछित सह उत्पादों यथा – फ्लाई एश, रेड मड आदि के बेहतर उपयोग की सम्भावनाओं को तलाश कर राजस्व बढ़ाने में योगदान कर रहे है।

साथ ही लागत में कमी लाने हेतु अति अनिवार्य है कि हम उत्पादन प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं अथवा बाधाओं का भी बेहतर समाधान खोंजे। ये समस्याएं तकनीकी होने के साथ-साथ मानव जिनत यथा – हड़ताल आदि भी हो सकती है। तकनीकी समस्याओं के समाधान हेतु हमारे कम्पनी में प्रोत्साहन योजनाएं भी चलाई जा रही है। जैसे – 5 एस, काईज़ेन, सिक्स सिग्मा, सर्जना इत्यादि। इन योजनाओं के द्वारा एक ओर जहां हम अपनी बाधाओं को कम करते हैं, वहीं दूसरी ओर कर्मचारियों को मौलिक उपायों के माध्यम से बड़ी समस्याओं का समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। साथ ही कार्यस्थल को सुरक्षित व व्यवस्थित बनाने में 5एस, एसए8000 जैसी प्रमाणन भी प्राप्त किए गए हैं। हमारे लिए यह गर्व की बात है कि कुशल प्रबंधन व रणनीतिक के कारण पिछले कुछ वर्षों से किसी भी हड़ताल के कारण एक भी मानव दिन की क्षिति नहीं हुई है।

इसके अतिरिक्त लागत में कमी लाने के लिए आवश्यक है कि हम सर्वोत्तम प्रथाओं (बेस्ट प्रैक्टिस) का उपयोग अपने कार्यशैली के दौरान करें। इस हेत कुशल प्रशिक्षण व समय की मांग के अनुसार तकनीकी उन्नयन अनिवार्य है। नालको में इन पहलुओं पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

लागत में कमी लाने हेतु रणनीतिक विचार मंथन भी आवश्यक है। इस हेतु प्रबंधन द्वारा उत्पादन प्रक्रिया के क्षतियों पर पर्याप्त विचारोपरान्त उचित निर्णय लिया जाना वांछित होता है। इस प्रक्रिया में मानव श्रम पर वेतन व सुविधाओं के रूप में किए जाने वाले व्यय शामिल होते हैं। उल्लेखनीय है कि एनटीपीसी द्वारा कुछ समय पूर्व घर से कार्य करने की सुविधा प्रदान करके समान मानव संसाधन के प्रयोग से कार्यालय में होने वाले व्यय पर कटौती करते हुए लागत में कमी लायी गयी तक है। कोविड-19 के प्रकोप के कारण एक लम्बी अवधि तक एक घर से काम करने की शुरूआत हो चुकी है, फिर भी यथार्थ रूप में इसे धरातल पर लागु करने हेत् अन्य तकनीकी एवं व्यावहारिक पक्षों पर विचार आवश्यक है। हमारे कम्पनी में भी इस प्रकार के व्यवस्था के माध्यम से कार्यालय समय के दौरान होने वाले व्यय यथा - स्थान, बिजली, पानी, इंफ्रास्ट्रक्चर आदि के लागत को कम किया जा सकता है। मानव संसाधन के साथ-साथ कच्चे पदार्थ के ऊपर किया जाने वाला व्यय भी रणनीतिक रूप से लागत में कमी लाने में अहम भूमिका निभाता है। कोयले की आपूर्ति हेतु हमारी कम्पनी द्वारा आत्मनिर्भर बनने के प्रयास; ताकि हमारी उत्पादन प्रक्रिया पर कोई प्रतिकुल प्रभाव ना पड़े, निश्चित ही दूरगामी सोच का परिणाम है।

साथ ही भविष्य में बचत हेतु आज व्यय की आवश्यकता पर भी पड़ती है। जैसे – अनुरक्षण व्यय, रखरखाव व्यय। उदाहरणार्थ – हमारी कम्पनी द्वारा अपने उत्पादन एककों में मच्छर, रोड सफाई, कूड़ा संग्रह इत्यादि मदों में लगभग 2 से 3 करोड़ रुपए वार्षिक रूप से खर्च किए जा रहे हैं। निश्चित ही इस माध्यम से हम एक तरफ जहाँ अपने कर्मचारियों को रहने की उचित सुविधा प्रदान कर उन्हें संतुष्ट करते हैं, वहीं दूसरी तरफ उन्हें बीमारियों से दूर रखकर चिकित्सीय व्यय में कमी लाते हैं तथा उनके स्वास्थ्य के माध्यम से मानव दिनों की क्षिति को भी रोकते हैं।

पीटर ड्रकर ने कहा था कि "इससे कम उत्पादक और कुछ नहीं कि कुछ किया ही नहीं जाना चाहिए, उसे आप और कुशल बनाएं।"

उपरोक्त कथनानुसार अपने अवांछित कार्यों पर लगाम लगाकर अथवा पूर्णतया बंद करके लागत में निश्चित ही कमी लायी जा सकती है। सारांशत: हम कह सकते हैं कि उच्च उत्पादकता हेतु लागत के कमी लाने के विभिन्न पहलुओं पर विचार करके हम कम्पनी को नित नई ऊचाईयों पर ले जा सकते हैं और अंत में अपने अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक महोदय के शब्दों में निश्चित ही "आसमान को छू" सकते हैं।

> उप प्रबंधक (राजभाषा) निगम कार्यालय, भुवनेश्वर





# अहसास

### सदाशिव सामन्तराय

रास्ते के उमड़ पड़ते ट्राफिक से अभिलाष परेशान हो रहा था। ड्राईवर को वो पहले ही तीन बार जल्दी चलने को कह चुका था। ड्राईवर बेचारा मौका मिलते ही तेज चलाने की कोशिश कर रहा था, पर अगले चौराहे पर फिर लाल बत्ती उसे बेचैन कर देती थी। प्लेन के चेक-इन टाइम में सिर्फ आधे घण्टे का समय बाकी था। ट्राफिक जाम और कलकत्ता शायद एक-दूसरे के पर्यायवाची बनते जा रहे हैं। कलकत्ता का जिक्र आते ही ट्राफिक की चर्चा जरूरत होती है। गनीमत है, आज कोई बन्द नहीं है वरना शायद उसे एयरपोर्ट से ही वापस आना पड़ सकता है। लेकिन कलकत्ता शाहर से अभिलाष का विशेष रिश्ता है। कलकत्ता को वो कैसे भूल सकता है। इसी शहर से ही उसने अपने जीवन की पहली उड़ान भरी थी- जो उड़ान उसे जीवन आकाश में इतनी ऊँचाई तक ले गई थी कि उसने फिर कभी नीचे नहीं देखा था।

वो दिन उसे अच्छी तरह याद हैं। उस दिन उसे न्यूयार्क जाने के लिए एयर इण्डिया की फ्लाईट पकड़नी थी। प्लेन का टाइम रात ग्यारह बजे था। पिछली रात को उसने पुरी एक्सप्रेस कलकत्ता के लिए पकडी थी। रेलवे स्टेशन पर पिताजी, माँ और बहन आशा बिलख-बिलख कर रो रहे थे। मानो वो उन्हें हमेशा के लिए छोडकर जा रहा था। अभिलाष की हालत गांजे के नशे में डूबते व्यक्ति की तरह थी। एक तरफ अपने परिवार-वालों को समझाते-समझाते वह भी रो पडता था। पर दूसरी तरफ मन खुशी से पागल हो रहा था। एक तो वो जीवन में पहली बार हवाई जहाज में बैठने वाला था, दूसरा वो अमेरिका जा रहा था, उसे वर्ल्ड बैंक ने अमेरिका में हायर स्टडिज के लिए वजीफ़ा दिया था। वजीफ़ा भी इतना कि भारत की किसी बड़ी कंपनी से मिलने वाली तनख्वाह से भी ज्यादा। अभिलाष खुश कैसे न होता-भारत से वो सिर्फ एक ही छात्र था। इतना ही नहीं, वर्ल्ड बैंक ने उसे पढाई खत्म करने के बाद नौकरी का ऑफर भी दे दिया था। उसे यह सब एक सपने की तरह लग रहा था। वो बार-बार चिकोटी काटकर अपने को यह सब हकीकत होने का अहसास करा लेता था। पुरी एक्सप्रेस में अमेरिका के ख्वाबों में डबा वो न जाने कब सो गया था। अगली सुबह उसकी नींद खुली तो उसने ट्रेन को बालेश्वर में खडा पाया। टेन पुरे सात घण्टे लेट हो चुकी थी। वह घबरा गया था। कलकत्ता में उसे वीजा लेना था। उसके बाद अमेरिकन एम्बेसी से उसे एक चिट्टी लेनी थी। उसे बैंक से विदेशी मुद्रा भी लेनी थी। अपने एक दोस्त से उसे कपड़े, कोट, पैंट टाई वगैरह भी लेनी थी। ट्रेन दो बजे कलकत्ता पहुँची। उस दिन कलकत्ता बंद था। बंदर की तरह एक जगह से दूसरी जगह वह दौडता फाँदता, गिडगिडाता रहा और भागता रहा। बार-बार उसे लग रहा था कि उसके सपने का महल टूट कर चुर-चुर हो जाएगा। उसे शायद अपनी ही नज़र लग गई थी। अंत में सारा सामान लेकर एयरपोर्ट जाने के लिए एक ऑटो रिक्शा में बैठा था। प्लेन के जाने में सिर्फ दो घण्टे बाकी थे। उसे याद है ऑटो के बन्द में फंस जाने पर वो एक हाथ रिक्शा में बैठा था। एक जगह हाथ रिक्शा को छोडकर सामान लेकर भागते-भागते वो पार्क सर्कस पहँचा था। वहाँ से दूसरा ऑटो रिक्शा लेकर किसी तरह एयरपोर्ट पहुँचा था। वहाँ शुरू हुआ था उसके रोने-गिड़गिड़ाने का सिलसिला। पहले तो उसे वापस जाने को कह दिया गया था। पर बाद में उसकी हालत पर पसीज कर प्लेन को अटका कर उसे उसमें दाखिल किया गया था। प्लेन ने जब जमीन छोडकर आसमान में उडान भरी थी उसके रोंगटे खडे हो गए थे। कलकत्ता शहर को नीचे छोड़ अपनी गरीबी एवं दया से भरी जिन्दगी को सलाम कर सफलता की ऊँचाइयों को लाँघता चला गया था वो!

"साहब! डोमेस्टिक या इण्टरनेशनल टर्मिनल?" ड्राईव के पूछने पर उसकी सोच का ताँता टूटा था। घड़ी पर नज़र पड़ी तो उसे आश्चर्य हुआ। अभी भी पाँच मिनट बाकी थे चेक-इन में। सामान लेकर काउंटर पहुँचा तो पता चला प्लेन दो घण्टे लेट है। यानि भुवनेश्वर में उसे रात के बारह बज जाएँगे। दो घण्टे एयरपोर्ट में काटने पड़ेंगे। ओफ! उसे खुन्दक आ रही थी। बोर्डिंग पास लेकर वेटिंग लाउन्ज में सोफे पर वो धस



गया। सामने टी.वी. में समाचार आ रहे थे पर शोरगुल की वजह से आवाज बिल्कुल साफ नहीं थी। अभिलाष को ज्यादा परेशानी नीता की वजह से थी। वो बेकार में ही उसे लेने इतनी रात गए एयरपोर्ट आएगी। न जाने कितनी बार नीता को एयरपोर्ट न आने को कह चुका था, पर कोई फायदा नहीं। फोन करके उसने नीता को प्लेन के दो घण्टे लेट होने की खबर दे दी और हमेशा की तरह खाकर सो जाने को भी कह दिया। पर वो जानता था कि नीता और उसकी बेटी श्वेता दोनों उसे लेने एयरपोर्ट पहुँच जाएंगे।

दो घण्टे काटने हैं उसे। पहले तो उसने कॉफी पी, फिर एक उपन्यास लेकर पढने की कोशिश करने लगा। पर इतने लोगों को उधर-उधर बैठे देखकर उसका ध्यान बार-बार उपन्यास से भटक जाता था। वहाँ बैठे लोगों की गतिविधियाँ देखने लगा। यह देखना उसे अच्छा लग रहा था कि कौन कैसे समय काटने की कोशिश कर रहा था। साथ ही साथ अच्छे कपडों में मेकअप-टेकप के साथ लोगों को देखना भी उसे भा रहा था। दूर बैठी एक युवती पर उसकी नज़र पड़ी। उसने लाईट पिंक रंग की साड़ी पहन रखी थी और एकटक उसे ही देखे जा रही थी। पहले तो वह सकपका गया फिर ध्यान से देखने पर उसे उसका चेहरा कुछ जाना पहचाना लगा। फिर इतनी दूर से कुछ सटीक कहना मुश्किल था। वो युवती भी शायद अभिलाष को पहचानने की कोशिश कर रही थी। उसके बैठने का ढंग, नाक-नक्श, सिर हिलाने का तरीका, कुछ अजीब से भाव ला रहे थे। उत्सुकता वश वो अपने को रोक नहीं सका और बाथरूम के बहाने उस ओर बढ गया। पास जाकर मानो उसके पैरों तले जमान खिसक गई। वो शायना थी। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा था। वह वहाँ से खिसक जाना चाह रहा था कि पीछे से आवाज आई- "अभिलाष", शायना ने भी उसे पहचान लिया था।

"अभिलाष! तुम मुझे पहचान नहीं रहे हो?" शायना ने उत्सुकता से पूछा।

"हाँ...हाँ... मैं पहचान रहा हूँ", सकपका कर अभिलाष ने कहा।

"कहाँ जा रहे हो...." धीरे से बात आगे बढ़ाते हुए शायना ने पूछा।

"ऑफिस के काम से यहाँ आया था। भुवनेश्वर लौट रहा हूँ। और तुम?"

"मैं दिल्ली जा रही हूँ, मेरे पति सुरेश बिजनेस के सिलसिले में

वहाँ गए हैं। हाँ! हमलोग कटक में रहते हैं। जगतपुर में हमलोगों की एक पी.वी.सी. फैक्ट्री है।"

"अभिलाष तुम क्या करते हो?"

"मैं सरकारी नौकरी करता हूँ। शायना जितना बात बढ़ाने की कोशिश कर रही थी, अभिलाष बातों का सिलसिला थाम देना चाहता था।"

"तुम्हारा परिवार......"

"मेरी पत्नी नीता गृहिणी है। एक बेटी श्वेता क्लास चार में पढ़ती है"

"आज मैं कितनी खुश हूँ। पूरे पच्चीस साल बाद हम लोग मिले हैं। रेवेन्सा कॉलेज के वो खुशगवार दिन मैं हमेशा याद करती हूँ। तुम्हारे साथ गुजारे लम्हे........"

"शायना मैं टॉयलेट जा रहा हूँ।" उसके बातों में ब्रेक लगाते हुए अभिलाष ने दो टूक कहा था।

"अभिलाष शायद तुमने आज तक मुझे माफ़ नहीं किया है। वो बचपन की नादानी का मुझे भी बड़ा अफसोस है। मैंने कई बार तुम्हें तलाशने की कोशिश की थी। मैंने सुरेश से भी पूछा था। पर उसने कहा था कि तुमने मना किया है। अभिलाष आओ, थोड़ी देर बैठकर बात तो कर सकते हैं........।"

"नहीं शायना मेरी प्लेन का वक्त होने वाला है। वैसे भी मैं टॉयलेट जा रहा हूँ....." कहकर अभिलाष आगे बढ़ गया। टॉयलेट से लौटकर वो शायना के बगल से तेजी से गुजरता हुआ अपनी सीट पर जा बैठा। शायना दूर से चेहरे पर भोलापन लिए उसे मायूस होकर देख रही थी।

शायना की इसी सादगी और भोलेपन ने तो उसके इतने करीब खड़ा कर दिया था। अभिलाष के पिता बहुत गरीब थे। छोटे से जमीन के टुकड़े से पसीना बहाकर जो कुछ पैदा किया उसे बेचकर अपने इकलौते बेटे को पढ़ाने का बीड़ा उठाया था। अभिलाष पढ़ाई में आश्चर्यजनक रूप से तेज था। गाँव के पास के एक स्कूल में पढ़ता था। गाँव में शिक्षक तो उसे न्यूटन कहते थे। सभी कहते थे कि यह लड़का एक दिन पूरे जिले का नाम रोशन करेगा। अभिलाष ने वो कर भी दिखाया। हाईस्कूल परीक्षा में वो पूरे ओड़िशा में तृतीय आया। खबर पाकर उसके माँ-बाप जितना खुश नहीं थे, पूरा गाँव खुशी से पागल हो गया था। आसपास के गाँव के लोगों का हुजूम लग गया था – अभिलाष को देखने के लिए।



लोगों से उधार लेकर बड़ी मुश्किल से पिताजी ने रेवेन्सा कॉलेज में अभिलाष का दाखिला करा दिया था। पिताजी दिल पर पत्थर रखकर भीगी आँखों से उसे वहाँ हॉस्टल में छोडकर आए थे। रेवेन्सा में भी अपनी बुद्धिमता से वो शिक्षकों का चहेता बन चुका था। इतना नाम पाकर मानो वो अपने दुःख एवं गरीबी के जीवन को भुला चुका था। यहीं पर उसकी मुलाकात हुई थी उसकी क्लास की लड़की शायना से। अभिलाष के विपरीत शायना बहुत अमीर घर से थी। रोज कार आकर उसे छोड़ती थी। धीरे-धीरे अभिलाष शायना दोस्त बन गए थे। शायना अभिलाष से पढाई समझने में मदद लेती थी। खाली समय में दोनों लाईब्रेरी में बैठकर घण्टों गप्प मारते रहते थे। शायना कई बार जिद करके उसे अपने आलीशान घर में भी ले गई थी। उसके पिता भी अभिलाष की बड़ी तारीफ किया करते थे। अभिलाष भी शायना से इतना प्रभावित हो चुका था कि वो रात दिन सिर्फ उसी की याद में डूबा रहता था। उस पर उसने कविताएं भी लिखनी शुरू कर दी थी। शायना यह सुनकर सिर्फ मुस्करा देती थी। अभिलाष कभी भी इस लगाव को प्यार का रूप नहीं दे पा रहा था। दूसरी तरफ शायना ने भी इस तरह की पहल कभी नहीं की थी। कॉलेज में उन दोनों की नजदीकियों की चर्चाएं होने लगी थी।

इसी तरह हँसते खेलते परीक्षाएँ खत्म हो गई। इस बार भी अभिलाष पूरे ओड़िशा में द्वितीय आया था। कॉलेज के प्रिंसीपल एवं शिक्षकों ने उसे सम्मानित किया था। उसकी खुशी का घड़ा उस दिन टूटा जब उसने देखा कि उसके सभी दोस्त – यहाँ तक की शायना ने भी राउरकेला इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला ले लिया। लाख कोशिश करने के बावजूद उसका परिवार इतने पैसों का जुगाड़ नहीं कर पाया और वो इंजीनियरिंग में नाम नहीं लिखा सका। वो अकेला रह गया। इस गम को वो बर्दाश्त न कर पाया और रात रात भर रोता रहा था। उसे वो दिन याद है जब शायना ने उसे अपने घर बुलाया था। उस दिन शायना ने इंजीनियरिंग में दाखिला मिलने की वजह से पार्टी रखी थी। पार्टी में अभिलाष को अहसास हुआ था कि सिर्फ अच्छा पढ़ने से जिन्दगी की हर खुशी नहीं मिल जाती। नसीब का भी बहुत कुछ हाथ रहता है जिन्दगी के सफ़र में।

शायना उस दिन एक और लड़के से घुल-मिल कर फुदक रही थी।

"यह सुरेश है। सुरेश को परीक्षा में नौवा स्थान मिला है। उसके पिता मेरे पिताजी के करीबी दोस्तों में से है। सुरेश ने भी इंजीनियरिंग में दाखिला लिया है। हम दोनों की ब्रान्चेज भी एक ही हैं" शायना एक ही सांस में बोलती गई थी।

"हां, सुरेश! यह अभिलाष है। मेरा अच्छा दोस्त! रेवेन्सा में अभिलाष मुझे पढ़ाता था, अब तुम मुझे पढ़ाओगे......." हँसते-हँसते शायना ने कहा था।

"सुरेश! पता है, अभिलाष को पूरे राज्य में दूसरा नम्बर मिला है। लेकिन बेचारा गरीबी की वजह से इंजीनियरिंग पढ़ नहीं पा रहा है। एनी वे अभिलाष इज ए वेरी गुड ब्वाय।" शायना के शब्द जैसे गर्म पानी की बूँदों की तरह उसके कान में पड़ रहे थे। उसकी आँखें नम हो गई थी। आज उसे अहसास हुआ कि जिसे वो प्यार का पौधा समझता था, वो वाकई में एक बहुत बड़ी गलतफहमी थी। शायना ने उसे दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल फेंका था।

रुँधे गले उसने कहा। - "शायना मुझे बहुत जरूरी काम है। मैं चलूँगा।"

"अभिलाष! देखो बुरा मत मानना। हमें एक दिन तो एक दूसरे से बिछड़ना ही था। कभी भगवान ने चाहा तो फिर मुलाकात होगी। मैंने बहुत विचार किया था तुम्हारा साथ देने का, पर देखो – एक धीरे चलती गाड़ी में बैठने के लिए तेज चलती गाड़ी को तो छोड़ा नहीं जा सकता? हर किसी को वक्त की नज़ाकत को समझना चाहिए, वरना हम जिन्दगी में पीछे रह जाएंगे।" शायना उसे समझाने की कोशिश करती जा रही थी।

"ठीक है, शायना! बाय, बेस्ट ऑफ लक....." कह कर अभिलाष चला गया था।

उस दिन मानों उसने अपनी हँसी वहीं पर छोड़ दी थी। अपने अच्छे स्कोर की बदौलत उसे दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स में दाखिला मिल गया। साथ ही उसे स्कॉलरिशप भी मिल गई। दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स में भी उसने सर्वोच्च स्थान पाया और युनिवर्सिटी में रिकार्ड बनाया। उसकी इस प्रतिभा से प्रभावित होकर वर्ल्ड बैंक ने हायर एजुकेशन के लिए उसे न्यूयार्क भेजा। न्यूयार्क में पढ़ाई खत्म होने पर उसकी शादी नीता से हो गई। नीता को लेकर वो वर्ल्ड बैंक की नौकरी में चला गया। अब वो भी बहुत अमीर हो चुका था। गाँव में कई एकड़ जमीन, गाँव में बड़ा घर, भुवनेश्वर में बड़ा घर। एक के बाद एक मंजिल वो पाता गया था। जब वो वर्ल्ड बैंक में था, उसे ओड़िशा सरकार ने मुख्यमन्त्री के आर्थिक सलाहकार बनने का न्यौता दिया और उसने मान लिया। पिछले दो साल से वो इस पद पर काम कर रहा था। राज्य का हर बड़ा निर्णय उसकी मंजूरी



के बाद ही लिया जाता है। वह अब काफी बड़ा आदमी बन चुका है। उससे मिलने के लिए ऊँचे से ऊँचे ओहदे का व्यक्ति भी लालायित रहता है।

"अभिलाष! इतने दिन बाद मिलने के बावजूद तुम इतना दूर....." शायना उसके पास वाली सीट पर बैठते हुए बोली।

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। दरअसल प्लेन के लेट हो जाने की वजह से थोड़ा परेशान हूँ।" बात को टालते हुए अभिलाष बोला।

शायना ने उसके बाद अपनी कहानी की जैसे कैसेट ही लगा दी हो। "इंजीनियरिंग पास करके सुरेश ने एक बड़ी फैक्ट्री लगा ली। उस समय पॉलीथीन बैग बनाने की सिर्फ उन्हीं की फैक्ट्री थी। मोनोपोली मार्केट में काफी पैसा बनाया दोनों ने। इसी के चलते उन्होंने 20 करोड़ की एक इम्पोर्टेड मशीन भी खरीदी। अचानक पॉलीथीन बैग के बैन हो जाने से माल बेचना मुश्किल हो गया। उत्पादन 50% करने से भी माल नहीं बिकता था। एक तरफ तो माल का न बिकना, दूसरी तरफ नई मशीन पर कर्जे का बोझ, जिससे धीरे-धीरे उनकी फैक्ट्री बीमार हो गई और पिछले महीने ओ.एस.एफ.सी. ने उनकी फैक्ट्री को सीज कर लिया। सुनते हैं कि ओ.एस.एफ.सी. इस फैक्ट्री को नीलाम करने को सोच रही है।" शायना अपनी आपबीती सुनाते जा रही थी। पर अभिलाष उसे सुनने के मुड में नहीं था।

"सुरेश कुछ रिश्तेदारों से रुपये का जुगाड़ करने के लिए दिल्ली गए हैं। उन्हें दो महीने लग जाएँगे। हमारा सब कुछ इसी में लगा है। अगर इस बीच नीलामी नहीं होती है, तो हम लोग पैसा देकर फैक्ट्री को छुड़ा लेंगे। उसके बाद हम लोग पी.वी.सी.पाइप बनाना शुरू करेंगे। उसमें ज्यादा मुनाफा है। अब तो भगवान ही हमें बचा सकता है। खैर! अभिलाष! मैं भी कितनी पागल हूँ, हम लोग इतने दिन बाद मिले हैं और मैं हूँ कि तुम्हें अपना दुखड़ा सुनाते जा रहीं हूँ....."

"अच्छा तुम भी तो अपनी कहानी...."

"मेरी कहानी में ऐसा कोई खास नहीं। सरकारी नौकरी, सरकारी घर, रोज एक ही तरह की जिंदगी।" उसे ज्यादा कुछ भी कहने की कोई इच्छा नहीं थी। वो शायना से दूर रहने की आदत डाल चुका था, आज भी वो वही करेगा। पर शायना की कहानी ने उसे संजीदा जरूर कर दिया था। पिछले दिनों उसने जितनी भी कोशिश की थी शायना को भूल जाने की, पर क्या कभी भी वो उसे मन से पूरी तरह निकाल सका था? शायद इसीलिए लोग कहते हैं कि पहला प्यार एक दूब घास की तरह है जिसे जितना काटो, कभी भी खत्म नहीं होता। क्या वो आज तक भी शायना के साथ काटे उन लम्हों को भूल पाया है?

"शायना! तुम क्या कह रही थी, तुम्हारी फैक्ट्री नीलाम....." अभिलाष ने अपनी भावों की लहरों से वापस आकर दृढ़ता से पूछा।

" हाँ! अभिलाष हमारी मेहनत से बनाई फैक्ट्री को ओ.एस.एफ.सी नीलाम करने जा रही है......." भावुक होकर शायना ने कहा।

तब तक अभिलाष मोबाईल से किसी फोन नम्बर को डायल कर चुका था।

"अभिलाष पटनायक बोल रहा हूँ, चीफ मिनिस्टर ऑफिस से....ओ.एस.एफ.सी. के एम.डी. को लगाना...."

"हाँ मि. त्रिपाठी.....अभिलाष पटनायक दिस साइड....जस्ट ए मोमेण्ट" फोन को हथेली से दबाए धीरे से उसने शायना के कान में पूछा, "तुम्हारी फैक्ट्री का नाम क्या है?"

" मॉडर्न प्लास्टिक इण्डस्ट्रीज, जगतपुर" आश्चर्यचिकत होकर शायना ने कहा।

"हाँ, मि. त्रिपाठी! मॉडर्न प्लास्टिक इण्डस्ट्रीज मेरे एक जिगरी दोस्त की है। उसने पेमेण्ट डिफॉल्ट किया है। जिस वजह से शायद आप उसे नीलाम करना चाहते हैं। मेरा अनुरोध है कि आप उन्हें तीन महीने का समय दे दीजिए। अगर चाहें तो मैं सी.एम. से अनुमति दिला दूँगा। ओ.के. थैंक्यू! बाय!"

"लो, शायना अब तुम्हारी फैक्ट्री नहीं बिकेगी।" आश्वश्त होकर अभिलाष ने कहा।

अनाउन्समेंट से पता चला कि उसके चेक-इन का टाइम हो गया था। सीट से उठते हुए उसने कहा "शायना! कभी-कभी तेज चलती गाड़ी से धीमे चलनेवाली गाड़ी भी आगे निकल जाती है। खैर! मेरे प्लेन का टाइम हो गया है। फिर मिलेंगे।" अपना विजिटिंग कार्ड उसके हाथ में रखते हुए अभिलाष बोला और चेक-इन काउण्टर की ओर बढ गया।

शायना एकटक किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर उसे देखती रही। आज उसे अहसास हो रहा था कि वह कितनी गरीब है।

> कार्यपालक निदेशक (सामग्री) निगम कार्यालय, भुवनेश्वर





# भारतीय नारियाँ और उनकी साड़ियाँ

सुमिता सहाय

यह एक बहुत ही सामान्य और जानी मानी कहावत है:

"आप खुशियाँ नहीं खरीद सकती, पर आप साड़ियाँ खरीद सकती हैं, जो खुशी खरीदने जैसा ही है।"

और यह कितना सच है, यह मेरा अनुभव कहता है। साड़ियाँ खरीदने की खुशी कुछ अलग ही है, कभी भी-कहीं भी। एक भारतीय और वह भी एक नारी होने के नाते साड़ियों के लिए मेरा प्रेम अथाह है। साड़ी का प्यार इंसान से क्या-क्या नहीं करवाता और कहाँ कहाँ नहीं ले जाता है।

आखिर ऐसा क्या है <mark>इस सा</mark>ड़ी में! पर हाँ कुछ तो <mark>बात</mark> है-जरूर।

कभी मन अगर परेशान हो या व्यथित हो तो क्या हुआ, अपनी अलमारी खोल कर, साड़ी की अरेंजमेंट और री-अरेंजमेंट करने लगें तो समय कैसे बीत जाता है, पता ही नहीं चलता है। एक-एक साड़ी फोल्ड- अनफोल्ड करने के साथ कितनी यादें अनफोल्ड होने लगती है। 5-6 मीटर की साड़ी बस एक कपड़ा तो नहीं है;प्यार से भरी कितनी यादें जुड़ी हैं इसके साथ, किसी में माँ का प्यार भरा है तो किसी में पापा का अरमान। किसी साड़ी में स्कूल फेयरवेल पार्टी की याद छुपी है तो किसी में फर्स्ट जॉब इंटरव्यू का अनुभव। पता नहीं कहाँ-कहाँ से सारे पल एक साथ सिनेमा की तरह आँखों के सामने चल पड़ते हैं।

मजे की बात तो यह है कि हर एक साड़ी के साथ एक कहानी जुड़ी रहती है, कब लिया था, कहाँ से लिया था, किसने गिफ्ट किया था? कितने की है? कब पहना था? सब याद रहता है। हर साड़ी कुछ खास बात कहती है।

कुछ तो इतनी स्पेशल है कि उनको स्पेशल रैप में बड़े प्यार से रखा है। जैसे कि अपनी शादी की स्पेशल साड़ी और उनके साथ जुड़ी कितनी यादें। अगर नानी या दादी की साड़ी गिफ्ट में मिली हो तो सोने पर सुहागा। वह उनकी यादों और प्यार को हमेशा जीवित रखने का एक बहुत ही अच्छा जिरया है। हर साड़ी के साथ जुड़ी भावनाएँ ही विशेष होती हैं। माँ की साड़ी तो कुछ ज्यादा ही ख़ास होती है। उस साड़ी के स्पर्श में ही एक विशेष भाव होता है, भावनाएँ हैं, गरमाहट और प्यार है। जो माँ के पास होने का एहसास दिलाती है। माँ के गुजर जाने के बाद, जब भी माँ की याद आए, या कोई विशेष अवसर हो; बस माँ की एक साड़ी सारा मिज़ाज बदल देती है। उसमें लिपटकर माँ की खुशबू, गरमाहट और प्यार का एहसास तो बेमिसाल होता है।

शहर में साड़ी का बाज़ार या प्रदर्शनी लगी हो और मैं ना जाऊँ, ऐसा हो नहीं सकता। साड़ी खरीदने के लिए मैं कहीं भी और कभी भी तैयार रहती हूँ। पूरी आलमारी भर जाए, लेकिन साड़ी की खरीददारी रुक नहीं सकती। मेरा अनुभव है कि साड़ी प्रदर्शनी में चुनाव के बहुत अवसर मिलते हैं और बुनकरों से उचित दामों पर साड़ी खरीदने का सबसे अच्छा स्थान है और साथ में हमारा ज्ञान भी बढ़ता है। उन्हें भी प्रत्यक्ष तौर पर अपने ग्राहकों के साथ बातचीत करने में बहुत खुशी मिलती है।

किसी भी यात्रा से पहले यह जानकारी जरूर एकत्रित करती हूँ कि वहाँ की कौन सी हैंडलूम साड़ी प्रसिद्ध है और कौन सी जगह खरीदने के लिये सही है। अगर समय कम हो तो एयरपोर्ट से अच्छा स्थान क्या हो सकता है। प्रतीक्षा का समय किसी भी एयरपोर्ट पर बहुत मजे का होता है अगर वहाँ एक अच्छी सी साड़ी की दुकान हो। कुछ बड़े एयरपोर्ट जैसे कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, बैंगलोर, हैदराबाद, भुवनेश्वर, रांची में साड़ी शापिंग करके मैंने काफी अच्छी स्मृतियों का संग्रह किया है।

हमेशा से एक अरमान था कि, अपने देश के अलग-अलग राज्य की साड़ियों की साज तैयार करूँ। हर जगह की खास साड़ी को अपनी अलमारी में सजाऊँ और कोशिश जारी है। जितना भी लो, कम लगता है क्योंकि हमारा देश कुछ ख़ास ही है और साड़ियों के इतने प्रकार हैं कि पूछो मत! अपने सपने पूरा करना असंभव सा लगता है।



साड़ियों को आमतौर पर हमलोग वस्त के अनुसार कॉटन, सिल्क, सैटिन, सिफॉन आदि में वर्गीकृत करते हैं। लेकिन जैसे-जैसे साड़ियों का संग्रह बढ़ता रहा, साड़ियों का ज्ञान भी बढ़ता रहा और तब पता चला कि पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, हर प्रांत की साड़ियों की पहचान अलग-अलग है। प्रत्येक क्षेत्र का विशेष हैंडलूम व हस्तकरघा है, जिसे जानना व गणना करना इस जीवन में असंभव सा लगता है। फिर भी एक कोशिश है कि अधिकतर साड़ियों की राज्यवार पहचान कर पाऊँ। शुरूआत करती हूँ, पूर्वी प्रांतों से, जो जन्मभूमि भी और अब कर्मभूमि भी है।

बिहार की कुछ फेमस हैंडलूम साड़ियां हैं मधुबनी, तसर सिल्क, भागलपुरी जो विश्व प्रख्यात हैं और ग्रमीण महिलाओं की जीविका का साधन भी। सुंदर डिज़ाइन, कलात्मक शैली, रंग, परम्परागत बुनाई के लिए जाने जाते हैं। ओड़िशा राज्य में भी इनकी इतनी माँग है कि पूछिए मत, कुछ प्रसिद्ध साड़ियों में से संबलपुरी, बोमकाई, पासापली, गोपालपुर, डोंगरिया, खंडुआ, कोटपाड, पट्टचित्र इत्यादि हैं। हर एक साड़ी मास्टर पीस है।

पश्चिम बंगाल अपनी तांत, जामदानी, बालुचेरी, गराद, कंथा साड़ियों के लिए हमेशा से प्रसिद्ध रहा है। बिना गराद साड़ी के दुर्गा पूजा पूर्ण नहीं होती है। असम की मुगा सिल्क तथा इरि सिल्क अपने आप में बहुत यूनिक है। मेखला चादर असमी महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली प्रसिद्ध परम्परागत पोशाक वाली साड़ी है। मणिपुर हैंडलूम साड़ी जो मोइरंगफी के नाम से प्रसिद्ध है, वहाँ के स्थानीय हैंडलूम की शान है, इसके स्थानीय बुनाई तथा पैटर्न पूरी दुनिया में अपनी विशेषता के लिए प्रसिद्ध है।

अगर हम अपने पश्चिमी प्रांतों में जाएं तो महाराष्ट्र की पठानी साड़ियाँ अपने रॉयल स्टाईल तथा यूनिक बुनाई के लिए प्रसिद्ध है। प्रायः सभी दुल्हनों को अपने संग्रह में इस साड़ी की आवश्यकता होती है। गुजराती पटोला, बंधिनी, भूजोड़ी साड़ियां अपने चमकदार रंग तथा परम्परागत बुनाई शैली की वजह से बहुत लोकप्रिय तथा विशेष हैं।

कोसा सिल्क छत्तीसगढ़ की परम्परागत साड़ी है जो अपने बुनावट तथा हल्के रंग के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। यदि हम मुलायम तथा हल्की साड़ियों की बात करते हैं तो मध्य प्रदेश की महेश्वरी एवं चंदेरी साड़ियाँ विश्व विख्यात हैं। राजस्थान की साड़ियाँ जैसे कोटा डोरिया, अजरख राजस्थानी संस्कृति की चमक तथा रंगीनता को प्रदर्शित करती हैं। अब अगर उत्तर भारत की तरफ चलें तो सबसे पहले बनारसी साड़ियों का ख्याल आता है। हर लड़की के विवाह में बनारसी साड़ियाँ जरूरी होती हैं। प्रचुरता, रंग, बनावट में इन साड़ियों को बनाने की शैली बहुत विशेष तथा अलग है। यह राजसी ठाठबाट का अहसास दिलाती हैं। लखनऊ की चिकनकरी साड़ियाँ मुगल संस्कृति की देन हैं। विशेष हस्तकरघा प्रणाली, कला तथा गहन बुनाई इन साड़ियों को विशेष बनाती हैं।

पंजाब की फुलकारी शैली और जम्मू एवं कश्मीर की कानी, आरी, कशिदाकारी, वीव की साड़ियां वहाँ के ट्रेडिशन और कल्चर को बहुत खुबसुरती से दर्शाती हैं।

दक्षिण में तमिलनाड़ से केरल तक हर राज्य की साड़ियाँ प्रसिद्ध हैं, चाहे वो सिल्क हो या कॉटन। तमिलनाडु की कांजीवरम साडी किसी भी विशेष अवसर के लिए उपयुक्त है। जैसे शादी या कोई त्योहार। इसका सुहाना रंग इसे अधिक विशेष बनाता है। कई बॉलीवुड अभिनेत्रियाँ जैसे रेखा, हेमा मालिनी, श्रीदेवी, विद्या बालन आदि ने कांजीवरम साडियों को जबरदस्त लोकप्रियता प्रदान की है। केरल से कसाव साडियाँ सफेद तथा सोने के रंग से बनी सुंदर परम्परागत साडियाँ हैं। सभी विशेष अवसर जैसे विवाह तथा नव वर्ष उत्सव इन साड़ियों के बिना अधूरे हैं। यह सादगी में शिष्टता का प्रदर्शन करती हैं। आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना की सिल्क एवं कॉटन साड़ियाँ गुणवत्ता के लिए जानी जाती हैं जिनमें से कुछ के नाम उप्पदा, वेंकटगिरी,कलमकारी, गडवाल हैं। कर्नाटक की कुछ प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय साड़ियाँ मैसूर सिल्क, इलकाल हैं। सुंदरता, बनावट, लालित्य, बुनाई या किसी विशेष प्रधान की बात करें तो साडियो का कोई मेल नहीं है। यह सर्वदा विद्यमान रहते हुए प्रचलन में बनी रहती है।

ये कहना उचित ही होगा कि हर नारी का प्यार अपनी साड़ी के लिए अनोखा होता है।

सैकड़ों भारतीय नारियों की तरह मेरा भी यही अरमान है कि जैसे-जैसे साड़ियों का संग्रह बढ़े जिंदगी में खुशियाँ भी दोगुनी होती रहें। सभी बुनकरों को अभिवादन और सादर नमन, जो प्रत्येक बुनाई को सर्वोत्तम बनाने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं तथा हमें हमेशा खुशी प्रदान करते हैं। भविष्य में उनके लिए कुछ कर पाने की कोशिश हमेशा रहेगी।।

> उप महाप्रबंधक (सामग्री) निगम कार्यालय, भुवनेश्वर





# जोखनी की माँ

# शगुफ़्ता जबीं

आज सुबह सवेरे आदतन व्हाट्स एप्प खोलते ही यह तस्वीर दिखी। वैसे तो अक्सर उम्रदराज औरतों की छवि ऐसी ही होती है पर इसमें कुछ तो खास था जो अनायास ही मुझे अपनी ओर खींचे ले रहा था। ऐसा लग रहा थी कि अभी ये छवि जीवंत हो उठेगी और मुझे पुकार उठेगी......."मईयाँ.....!" इस शब्द के कानों में गूँजते ही बहुत कुछ साफ़ हो गया।

"अरे......! ये तो बिल्कुल 'जोखनी की माँ जैसी है!!"

मुझे जोर से यह बात हँसकर बोलते देख इन्होंने अख़बार से नज़रें उठा चश्में के ऊपर से घूरा जैसे पूछ रहे हों कि बेगम सब ख़ैरियत तो है, अब जोश में कहीं उछल कर अपनी टाँगों में मोच न ले आना। पर मैंने इनकी इस दृष्टि का बिल्कुल बुरा न माना क्योंकि इन्होंने जोखनी की माँ को देखा ही कहाँ था?

'जोखनी की माँ' दरअसल हमारे घर की 'आपात कालीन सुविधा' थी जो हमारी कामवाली बाई के अचानक काम पर न आने से 4 बच्चों वाले घर में मची अफरातफरी को कम करने में अम्मी का हाथ बँटा देती थी। वो मुझे और मेरी बहनों को 'मईयाँ' कहती थी। बिहार में (जो अब झारखंड है) लडिकयों को प्यार से मईयाँ बुलाते हैं। 'जोखनी' दरअसल उसकी बेटी का नाम था और इस कारण उसका नाम 'जो<mark>खनी की माँ' पड गया था। वह हमारे घर के ठी</mark>क बगल वाले घर में रहती थी। घर तो किसी और का था, वो तो बस इसकी बाईं तरफ के हिस्से में बाहर की तरफ फ़ुस का छप्पर डाल कर रहती थी। यानी इसके भाग्य में एक कमरा भी न था। उस समय मैं शायद सातवीं कक्षा में पढ़ती थी इसलिए बहुत अच्छी तरह तो याद नहीं पर यह जरूर ध्यान है कि उसका एक बेटा था जो उसे अकेला छोडकर अपनी पत्नी के साथ कहीं और रहता था। यानी चालीस साल पहले समाज के संस्कार आज जैसे ही थे! कहीं कुछ खास नहीं बदला। 'जोखनी की माँ' बिलकुल अकेली उस घर में रहती थी। पति था, जो हमेशा शराब पी कर आता था और हंगामा करता; पर जोखनी की माँ उसे झाड़ से मार-मारकर भगा

देती थी। इस समय तो कुछ समझ में नहीं आता था, पर आज उसकी पीठ थपथपाने का मन करता है क्योंकि जो साहस हम उच्च वर्गीय लोग नहीं कर पाते; वो उसने उस समय कर दिखाया था, जब उसके अपने रहने और खाने-पीने का भी कुछ ठिकाना नहीं था। पति और बेटा-बहू भले ही साथ न हो पर उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था।

मुझे याद है कि, अक्सर उसे अपने खाने पीने की भी चिंता भी नहीं रहती थी। जब उसके पास कुछ नहीं रहता तब वो हमारे घर आती और पूछती हमारे पास 'बिलाती' है?

क्या..?? दरअसल वो टमाटर माँगती थी। टमाटर को इस समय 'विलायती' भी कहा जाता था जो कि उसकी जबान में 'बिलाती' था। मैं अक्सर उससे पूछ बैठती........

"जोखनी की <mark>माँ, इस बिलाती का तुम</mark> करती क्या हो?"

वो मुस्कुरा कर कहती....."ई ठो आग में भून लेंगे और नून, लाल मिर्ची और सरिसों के तेल डाल के चटनी बना लेंगे....।"

"फिर इसका क्या करोगी.....? मेरी जिज्ञासा बढ़ जाती।"

"का करबइ......भात में मैस-मैस के (मिला मिला के) खैबई आउ का करबइ...."

"और दाल सब्जी......?" <mark>मैं प्रश्नों की बौछार करती रहती।</mark>

"ऊ कहाँ से मिल<mark>तई......भातो मिल जा रहा है ओहि बहुत</mark> सुकर है.....। कभी ई टमाटर के चटनी खा के देखा......केत्ता सुआद है।"

मैं आश्चर्य से उसे देखती रहती और उसके मन के चैन का सोचती जो भात चटनी खा के ही खुश था। उसका वो ठिकाना जिसकी दीवारें भी नहीं थीं। केवल फूस की छप्पर थी। उसी के नीचे शीतल पवन के झोंकों का मज़ा लेकर चैन की नींद सोती और वहीं फटी चादर टाँग कर पर्दा कर नहाधो लेती। एक ओर कोने में मिट्टी का एक चूल्हा बना था जिसपर उसके स्वादिष्ट व्यंजन बनते। पास में ही एक चटाई



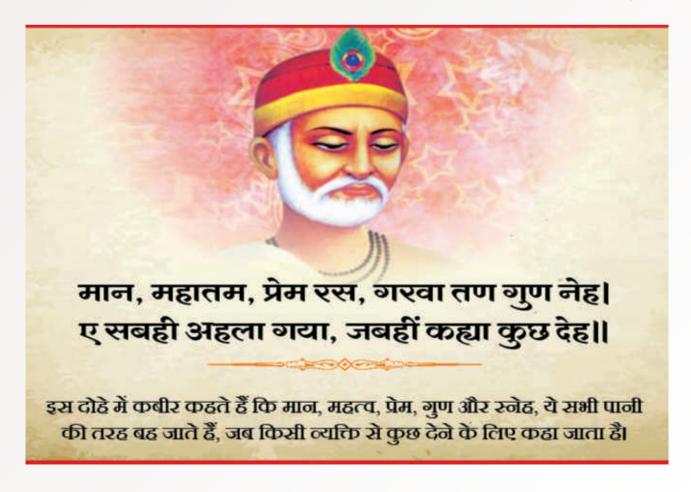
पर वो सोती और कपड़ों की एक गठरी थी सरहाने पड़ी रहती थी। बस यही कुल कायनात थी उसके महल में। जब बारिश होती तो छप्पर के पुआल से पानी की बूँद-बूँद टपकती और वो बैठ कर उसे निहारती जैसे कोई मनोरम दृश्य हो!

हम बुद्धिजीवी सोचते हैं कि, जोखनी की माँ जैसे न जाने कितने लोग हैं जो दुनिया में आते हैं और कीड़े-मकोड़ों सी जिंदगी बसर कर चले जाते हैं। पर यह हमारी भूल है....! हमारे पास तो वो आँख ही नहीं जो देख पाए कि, हम जब एक सामान्य तीन कमरों के फ्लैट के बाद फिर बड़ी सोसाइटी में फ़्लैट बनाते हैं और फिर उससे भी असंतुष्ट होकर एक अपना अकेले का मकान बनाकर भी वो सुखशांति नहीं ढूँढ़ पाते जो 'जोखनी की माँ' को उस छप्पर तले मिलती थी। उसकी टमाटर की चटनी के सामने हमारे पिज़ा, बर्गर, बिरयानी और थाई खाने सब बेस्वाद हैं। हमारे पास सारे साजो-सामान होकर भी हमें और अधिक पाने की चिंता सताती रहती हैं, जबिक वो अपनी गठरी में ही मस्त थी। सलाम करती हूँ मैं उसके स्वाभिमान को जो उसने एक शराबी पित के साथ न रहकर अकेले रहने की हिम्मत की और समाज के ठेकेदारों की टीका-टिप्पणी का कोई असर

अपने व्यक्तित्व पर न पड़ने दिया। कितनी शक्तिशाली सोच थी उसकी जब वो कहती थी......"ए मईयाँ...जरा हमको बताओ तो.......ई ससुर मउलाना जो हमरा सिखावे है कि बुढ़वा को काहे भगा देती है, तो हम पूछब ओकरा के जब बुढ़वा हमरा सरीर मार-मार के नीला कर देवे ला तब ऊ ओकरा काहे न समझावे है कि सराब पीना मुसलमान के हराम बोल के गइन हैं मुहम्मद साहिब.....सब कानून हम औरतियन के लिए ही बा.......हमरा बस चले त ऊ मउलाना के भी दू लप्पड धर दें.....हाँ नहीं तो।"

आज जब समाज के हर तबके में आए दिन सुहागनों के लाल सिंदूर के पीछे नीले धब्बे नज़र आते हैं, घर के बच्चे जब सहम कर शराबी बाप के डर से कोनों में दुबके नज़र आते हैं और बहु-बेटों के घर छोड़कर चले जाने पर निढाल माँ-बाप अपनी किस्मत पर रोते हैं तो मुझे "जोखनी की माँ" बहुत याद आती है और मैं सोचती हूँ काश वो मुझे बचपन में नहीं बल्कि आज होशो-हवास में मिली होती तो मैं उसे न जाने कितनों के लिए प्रेरणा-स्रोत बना पाती!!

> अर्धांगिनी - श्री जावेद रेयाज़ समूह महाप्रबंधक (औ.अ.व अ.) निगम कार्यालय, भुवनेश्वर







# क्या पीड़िता दलित है!

# स्वाती तिवारी

"प्रिया! प्रिया! प्रिया!" माँ ने तीन बार आवाज लगाई । चौथे बार में उन्होंने आया को आवाज लगाई । "मीना प्रिया कहाँ है ?"

"मैडम, बेबीजी तो सवेरे-सवेरे ही एन.जी.ओ चली गईं। "अपना काम करते हुए मीना ने कहा।

"किसी चीज की कमी ना है उसकी ज़िंदगी में पर पता नहीं क्या भूत सवार है इस लड़की पर जो हर दिन उस गंदी बस्ती में जा कर मास्टरनी बनती फिरती है। "माँ ने गुस्से में कहा!

"जाने दो कर लेने दो उसे अपनी मर्जी की जब तक आज़ाद है तब तक! एक बार शादी हो गई तो घर गृहस्थी के चक्कर में ये सारा भूत उतर जाना है!" दादी ने समझाते हुए कहा!

"अरे मीना दीदी ये बेबीजी को एन.जी.ओ में काम करने की क्या ज़रूरत है? सबकुछ तो है उनके पास !" दूसरी आया शालू ने पूछा!

"बेबीजी ये पैसों के लिए नहीं करती पागल। दरअसल अपने साहब जी के माली लाल की एक बेटी थी कमला, जिसके साथ बेबीजी बचपन में खेला करती थीं। लेकिन आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण लाल ने 13 वर्ष की अल्प आयु में ही उसका विवाह कर दिया। और 19 वर्ष की आयु आते-आते उसे 2 बेटियाँ और एक बेटा था। बेटे के चक्कर में उसके ससुराल वालों ने कई बार उसका गर्भपात करवाया जिस वजह से वो बच्चेदानी के कैंसर से पीड़ित थी और 23 वर्ष की अल्प आयु में ही वो दुनिया से चली गई।" मीना ने समझाते हुए शालू से कहा। मीना उस घर में सालों से काम कर रही थी। उसने प्रिया को बड़े होते हुए देखा था।

मीना ने आगे का वाक्या बताया, "किन्तु बेबीजी जब भी कमला के बारे में पूछती, तो मैडम जी बस यही कह कर टाल देतीं कि पढ़ाई लिखाई करती नहीं थी वो तो घर बैठा कर क्या करता लाल? ये बात बेबीजी के दिल में घर कर गई। उन्होंने सोचा अगर कमला पढ़ाई करती तो ये नौबत ही न आती। बस यही घटना उनके एन.जी.ओ से जुड़ने की प्रेरणा बनी।" "लाली पढ़ भी लिया कर कभी थोड़ा! इतनी तेज है पढ़ाई में फिर समय क्यों नहीं देती पढ़ाई को!" प्रिया ने बस्ती की एक बच्ची लाली को समझाते हुए कहा।

"अरे प्रिया दीदी माँ के काम में हाथ भी तो बटाना होता है!" लाली ने प्रिया की ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा।

"अच्छा कोई नहीं मैं तेरी माँ को समझा दूँगी, बस तू हर रोज पढ़ने आया कर!" प्रिया ने लाली के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा।

" पक्का ना दीदी, आप माँ से बात करोगी ना! उसे समझाओगी ना, कि वो मुझे पढ़ने दे!" "हाँ बाबा पक्का! अब तू घर जा मैं भी चलती हूँ।" कहकर प्रिया ने उसे हाथ पकड़कर नाला पार करवाया।

अगली सुबह जब प्रिया एन.जी.ओ के लिये तैयार हो रही थी तभी मीना जोर-जोर से चिल्लाते हुए आई । "बेबीजी! बेबीजी! अनर्थ हो गया बेबीजी!" मीना बेतहाशा रोती जा रही थी।

"अरे मीना दीदी क्या हुआ? आप इतनी घबराई हुई क्यों हो? और आप इतना हाँफ क्यों रही हो?" मीना का कंधा पकड़ते हुए प्रिया ने पूछा।

"बेबीजी वो! वो!"

"हाँ क्या हुआ आराम से बताओ!"

"बेबीजी वो कल रात किसी ने लाली का बलात्कार कर उसकी हत्या कर दी!" मीना ने बिलखते हुए कहा।

"क्या???? प्रिया के पैरों तले मानो ज़मीन ही खिसक गई। काटो तो खून नहीं। क! क! क! कैसे? कैसे दीदी? कैसे हुआ?" कहते हुए प्रिया नंगे पाँव ही बस्ती की तरफ भागी।

वहाँ पहले से ही मीडिया, पुलिस और लोगों की काफी भीड़ थी। लोग अपने-अपने हिसाब से घटना को समझने में लगे हुए थे और कुछ वीडियो बनाने में। प्रिया बेसुध थी उसे कुछ



समझ न आ रहा था। "अरे पीड़िता दलित है क्या! फिर तो ये ब्रेकिंग न्यूज़ बनेगी!" एक महिला पत्रकार ने कहा। "जैसा कि आप देख सकते हैं कि कैसे एक दलित बच्ची!" चटा ट ट क क क!!! प्रिया ने एक ज़ोरदार थप्पड़ पत्रकार के चेहरे पर जड़ दिया। वो हक्की-बक्की रह गई, उसे कुछ समझ न आया और पूरा वातावरण शान्त हो गया।

"बुरा लगा आपको? दर्द हो रहा है? गुस्सा आ रहा है? कोई नहीं अब आप भी मुझे एक थप्पड़ मारो और हाँ मारने के बाद मुझे ये ज़रूर बताना कि मैं किस जाति धर्म या समुदाय से हूँ। क्योंकि आप इंसान के दर्द से उसके जाति धर्म का हिसाब लगा लेती हैं ना! अरे वो मात्र 9 साल की बच्ची थी, और उसका कसूर बस यही था कि वो एक लड़की थी। अपराधी ने अपराध करते हुए उससे ये नहीं पूछा होगा के तुम किस जाति धर्म की हो। अरे मैडम! दर्द का, तकलीफ की, कोई जाति-धर्म नहीं होता। पर आप-लोग हर न्यूज़ में जाति-धर्म का तड़का लगा देते हो। दलित छात्र !मुस्लिम महिला! अल्पसंख्यक समुदाय!" प्रिया का गुस्सा फूट पड़ा था, वह कहती चली जा रही थी..

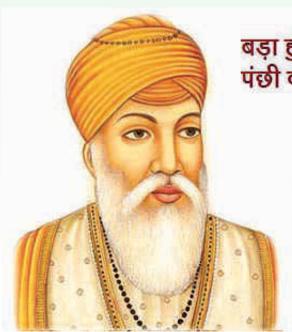
"बस-बस, अब बस कीजिये! आप-लोग पीड़ित को पीड़ित के नज़र से क्यों नहीं देखते? क्या जाति धर्म अलग होने से दर्द अलग हो जाता है? क्या आज इसके घरवालों पर जो बीत रही है वो दलित होने की वजह से अलग है? क्या इसकी माँ का दर्द जाति धर्म पर निर्भर है? छिः! छिः! एक खबर बेचने के लिये आप-लोग तो दर्द, भावना सभी को जाति, धर्म, समुदाय का जामा पहना देते हैं।"

पत्रकार सिर नीचे किए हुए ग्लानि से चुप हो गई और लोग तालियाँ बजाने लगे। "बस किजीए आप लोग!" प्रिया ने भीड़ को फटकारते हुए कहा।

"आज आपलोगों को मेरी बातें अच्छी लग रही होंगी और कईयों ने तो वीडियो बना कर वायरल भी कर दिया होगा। पर मैं ये भी जानती हूँ कि कल फिर, किसी और लाली के दर्द का हिसाब उसके जाति धर्म से लगाया जाएगा। "ये सुन कर भीड़ भी शर्म से धरा ताकने लगी।

प्रिया लाली को गोद में ले कर जोर जोर से ऐसे रोने लगी मानों किसी माँ से उसका बच्चा बिछड़ गया हो हमेशा हमेशा के लिये।

> अर्धांगिनी - श्री अखिल कुमार उप प्रबंधक (यांत्रिक) गृहीत विद्युत संयंत्र, अनुगुळ



बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर। पंछी को छाया नहीं फल लागे अति दूर ॥

कबीर दास

अर्थ: खजूर के पेड़ के समान बड़ा होने का क्या लाभ, जो ना ठीक से किसी को छाँव दे पाता है और न ही उसके फल सलभ होते हैं।





# भारतीय संस्कृति का क्षय क्यों हो रहा है?

### अप्रमेय परिडा

"भारत" - संस्कृतियों और परंपराओं का केंद्र होने के कारण, इसका नाम पृथ्वी पर सबसे विविध संस्कृतियों में से एक के रूप में जाना जाता है। विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और लोगों के मंडली भारत को "अनेकता में एकता" सार्वभौमिक विचार की दिशा में एक अद्वितीय पहचान प्रदान करती है।

भारतीय संस्कृति की प्राचीनता दुनिया भर में विख्यात संस्कृतियों में से एक है। दुनिया भर के लोग हमारी संस्कृति को देखना और इसमें जीना चाहते हैं, और इसके लिए वे अक्सर हमारे देश की यात्रा करते हैं और भारत के लोगों के साथ समय बिताकर अपने अनुभवों को समेटते हैं। जो सुंदरता भारतीय परंपराओं और संस्कृतियों की अनुभूतियों से मिलती है वह अन्य किसी स्थान पर नहीं मिलती है। भारतीय संस्कृति की विविधता ही इसकी संस्कृति और अस्तित्व का केंद्रबिंदु है और इसी नाते विभिन्न देशों के लोगों के दिलों में यह एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करती है। लेकिन भले ही हम अपने रहन-सहन और संस्कृति की विविधता के लिए जाने जाते हैं जो कि भारत का सबसे बड़ा खजाना और धरोहर है पर वास्तविकता यह है कि इसका क्षय हो रहा है।

यद्यपि आज वैश्वीकरण और विचारों का आदान-प्रदान अपने चरम पर है, तथापि भारतीय परंपराओं और संस्कृतियों का भविष्य अंधकारमय सा लगता है। सदियों पुराने परंपराओं के प्रति आज के युवाओं का असंवेदनशील रवैया और पश्चिमी विचारों के लिए अति रुझान, अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की अवहेलना ही शायद इस क्षय के कुछ कारणों में से एक है।

भारतीय संस्कृति प्रकृति में जटिल है और विविध धर्मों और रीति-रिवाजों में एकता स्थापित करते हुए, हमें समेटे हुए, समग्र भारतवर्ष का प्रतिरूप खड़ा करती है। भारतीय संस्कृति के दो सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं - मानव मूल्य और पवित्रता। मानव मूल्य से आशय - नैतिक, आध्यात्मिक और संस्कारगत मूल्यों से है, जबिक पवित्रता का अर्थ है एकता या अखण्डता। भारतीय संस्कृति बहुत समृद्ध और विविध है और हमें दूसरों के प्रति सिहण्णु होना सिखाती है। वैदिक शिक्षाओं से शांतिपूर्ण एकीकृत जीवन जीने के लिए मानवीय मूल्यों को विकसित किया गया है। भारतीय संस्कृति हमें शिक्षा और अनुभव द्वारा जीवन में मूल्यों के विकास के प्रमाण दिखाती है। भारतीय समाज के महत्वपूर्ण मूल्य जो सदैव प्रासंगिक और अपरिवर्तनीय हैं, वे भारतीय संस्कृति के प्राचीन ग्रंथों में लिपिबद्ध हैं।

मुझे हमेशा यह मुल्यबोध कराया गया कि भारतीय संस्कृति आध्यात्मिकता और संपूर्णता प्रदान करने के बारे में है, पर वही हमेशा भारतीय मूल्यों को पिछड़ा और रूढ़िवाद के साथ भी जोडता है। मेरे दृष्टिकोण के अनुसार भारतीय संस्कृति का केवल इसी कारण से उल्लेख किया जाता है। यही वजह है कि बहुत कम लोगों को हिंदी भाषा और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में पढना और लिखना आता है। यही कारण है सार्वजनिक रूप से अंग्रेजी बोलने को अभी भी श्रेष्ठता का उच्चतम मानक माना जाता है। हम खुद, और खुद ही केवल इस स्थिति के लिए उत्तरदायी हैं और प्रत्येक भारतीय अपने जडों से जुड़ता सा नहीं प्रतीत होता है। जो लोग भारतीय धर्म ग्रंथों को अवैज्ञानिक और अतार्किक बताते हैं, वे वैमानिका शास्त्र और औलबा स्तोत्र के पन्नों को देखें. जिनमें क्रमशः आधुनिक विमान और गणितीय अनुसंधान के मूल मॉडल हैं। लेकिन अभी भी इन लेखों की पुनः खोज, और उनकी प्रतिष्ठा सुर्खियों में नहीं है।

हालांकि, यह कहना मुझे बहुत परेशान करता है कि ब्रिटिश उपनिवेशवाद और पश्चिमी विचारों के प्रभाव ने हमें इतना विकलांग बना दिया है कि हम भारतीय संस्कृति और परंपराओं की व्यापक महानता को देख ही नहीं पाते हैं, जो कि लंबे समय से भारत के विकास, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों की आधारशिला है।

पश्चिमी संस्कृति ने वस्तुतः भारतीय मन को परोक्ष रूप से बहकाने का प्रयास किया है। वास्तव में कुछ लोग भारत की धरती पर एक नया यूरोप बनाने के प्रयास में इस सीमा तक चले गए हैं। सौभाग्य से इस प्रयास को भारतीय युवाओं के पुनर्जागरण की शक्तियों द्वारा जल्द ही विराम दे दिया गया।

यह दे<mark>श महान था</mark>, महान है और आगे भी रहेगा। बस हम युवाओं का यह कर्तव्य बनता है कि हम इसकी महानता को संजोएं और अपनी अगली पीढी को धरोहर की तरह सौंपे।

> पुत्र - श्री संबित कुमार परिडा महाप्रबंधक (मा.सं. व प्र.) निगम कार्यालय, भुवनेश्वर





# ऐसा कभी सोचा न था!

# प्रियदर्शिनी सामन्तराय

ऐसा कभी सोचा न था दुनिया इतनी सिकुड़ जाएगी, मीलों जमीनी दूरी को, इतना करीब ले आएगी।

ऐसा कभी सोचा न था हवा जहर बन जाएगी, जान बचाने के लिए, स्कूलों की छुट्टी हो जाएगी।

ऐसा कभी सोचा न था तकनीकी यहाँ पहुँच जाएगी, अपनो से बातचीत बंद, मोबाइल मैसेज लेकर आएगी। ऐसा कभी सोचा न था पढ़ाई का मान इतना गिरेगा, कुछ पढ़ो कहीं भी पढ़ो, नौकरी बिरला ही पाएगा।

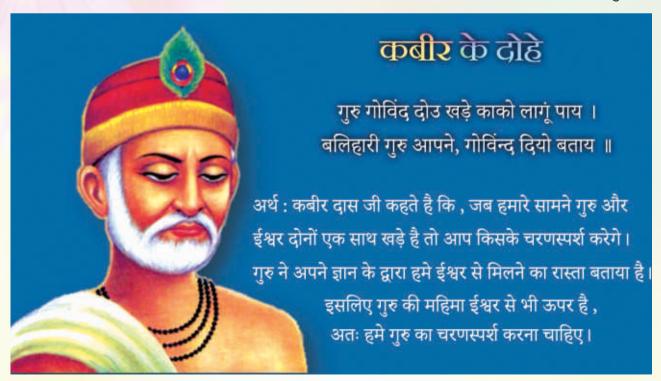
ऐसा कभी सोचा न था दुनिया ऐसी चकराएगी, गाड़ी की वेल्यू न<mark>हीं,</mark> पब्लिक साइकिल से आएगी।

ऐसा कभी सो<mark>चा न था</mark> वृद्धाश्रम भी भर जाएंगे, अपने खून के रिश्ते, मां-बाप को वहाँ छोड़ आएंगे। ऐसा कभी सोचा न था कोरोना हमें झकझोर जाएगा, हमारे ग़लत कर्मों की सज़ा, पूरे विश्व को देकर जाएगा।

ऐसा सभी सोचा न था नज़दीकी मौत लेकर आएगी, छह फीट की दूरी और मास्क, अपनों की जान बचाएगी।

ऐसा कभी सोचा न था आदमी अंधी दौड़ को समझ जाएगा, फिर से अपनी बुनियाद को, अपनाने को तरस जाएगा।

अर्धांगिनी - श्री सदाशिव सामन्तराय कार्यपालक निदेशक (सामग्री) निगम कार्यालय, भुवनेश्वर







# अगर मैं प्रधानमंत्री होती

# रजनी मिंज

प्रधानमंत्री का पद अत्यंत दायित्वपूर्ण और गरिमामय होता है। काश मैं प्रधानमंत्री बन पाती, हालांकि मैं इतनी अनुभवशील और योग्यवान तो नहीं। परन्तु साहित्य की यही विशेषता है कि अपनी कल्पनाओं को पन्नों पर उकेरा जा सकता है। एक जागरूक नागरिक होने के नाते काफ़ी सारे विचार मेरे मन में भी आते हैं, जिन्हें यहाँ मैंने अपनी लेखनी के माध्यम से आकार देने का प्रयास किया है।

प्रधानमंत्री के पद पर आसीन होने के बाद मैं सबसे पहले एक सक्षम, सचेत, संवेदनशील और सजग मंत्री-मंडल का गठन करूँगी। जिसमें देश के हर क्षेत्र के श्रेष्ठ जानकारों और अनुभवियों को शामिल करूँगी। किसी भी मसले पर फ़ैसला लेने से पूर्व मैं उनसे सलाह मशविरा करके चुनौतियों का सामना करूँगी। संस्कृत में एक श्लोक है:-

"महाजनस्य संसर्ग: कस्य नोन्तिकारक: पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ॥"

अर्थात् अच्छे लोगों का साथ किसके लिए उन्नतिकारक नहीं है? जल की बूँद को मोती पर पड़ने के पश्चात उसे भी मोती की शोभा प्राप्त होती है।

में सर्वप्रथम भारत की शिक्षा पद्दित पर ध्यान देती। एक देश का नागरिक जितना शिक्षित, उतना ही शिक्षित वह देश और उतनी ही उन्नति उस देश की। शिक्षा से मनुष्य के बुद्धि का और विकास होता है, वह ज्यादा से ज्यादा सम्भावनाओं की तलाश करता है। मनुष्य अपना दायरा बढ़ाता है। सही शिक्षा मनुष्य को एक दूसरे के प्रति सहनशील बनाती है। शिक्षित व्यक्ति अपने कार्य और कर्तव्यों का सही से पालन कर सकता है और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहता है। जो कि कहीं न कहीं देश की प्रगति में सहायक होते हैं। मैं प्रधानमंत्री होने के नाते यह सुनिश्चित करती कि हर सरकारी और निजी विद्यालयों में यथोचित वातावरण, सामान, पुस्तकें और सुविधाएँ मौजूद हों। शिक्षकों को सही समय पर उचित वेतन मिले। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अनुसंधान के उचित अवसर प्रदान किए जाते हों। शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षिकों की भर्ती निश्चित समय पर की जाती हो।

इसी संदर्भ से जुड़ा एक दूसरा मुद्दा है बेरोज़गारी। किसी भी सरकार के लिए बेरोज़गारी एक चुनौतीपूर्ण मुद्दा है। छात्र पढ़ाई पूरी करने के बाद अपनी-अपनी योग्यता के अनुरूप आवेदन डालते हैं। सही समय पर लिखित परीक्षा, चयन, भर्ती न होने पर युवा हताश हो जाते हैं और उनका ध्यान असामाजिक कार्यों की तरफ़ जाता है। मेरी पूरी कोशिश रहेगी कि नौकरी हेतु सारी प्रक्रियाएँ सही समय पर पूर्ण कर ली जाएँ।

इतिहास गवाह है कि निदयों के किनारें ही विभिन्न सभ्यताएँ फ़ली फ़ूली हैं। हम पानी के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। मेरी तीसरी कोशिश इसी से जुड़ी है – जल की व्यवस्था। जल मूल आवश्यकता है। हम सभी जानते हैं कि हमारे गाँवों और पिछड़े इलाकों में पानी की कितनी कमी है। इस कोरोना के संकटकाल में आधे-आधे घंटे के अंतराल पर हाथ साबुन से धोने के लिए कहा जाता है, पर उन लोगों का क्या जिनको पीने भर का भी पानी मिलना दुर्लभ है। मैं जरूरत के सारे इलाकों में स्वच्छ पानी का प्रबंध करवाती तथा यह भी सुनिश्चित करवाती कि पानी की बर्बादी न हो।

मेरी चौथी कोशिश स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में सुधार लाने की होगी। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 में स्वास्थ्य का अधिकार प्रदान किया गया है। परन्तु ज़मीनी हक़ीक़त में इसका सही उपयोग नहीं किया जा रहा है। मैं अस्पतालों के इमारतों, वहाँ की मूलभूत सुविधाओं, चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों की उपयुक्त संख्या का प्रबंध करवाती।

यदि मैं प्रधानमंत्री बनी तो मेरी पूरी कोशिश रहेगी कि मैं जेनेरिक मेडिसिन या सामान्य दवा को भारतीय बाज़ार में उतारू। जिससे कि सामान्य जनमानस की छोटी-मोटी बीमारियों जैसे – सर्दी, खांसी, बुखार, दर्द के लिए महँगी दवाईयाँ न खरीदनी पड़े। गाँवों-कस्बों में प्राथमिक



चिकित्सालय तो हैं, किंतु उनका सुचारु रूप से रखरखाव और उपयोग में आना जरूरी है। जिसका मैं समय-समय पर संज्ञान लेती रहूँगी। ऐसी व्यवस्था करूँगी जिससे गाँवों के हर कोने तक एम्बूलेंस की आवाजाही में अवरोध ना हो।

भारतीय अर्थव्यवस्था कई देशों की अर्थव्यवस्था से भिन्न है। यहाँ की अर्थव्यवस्था दो तरह के क्षेत्रों द्वारा संचालित होती है – संगठित क्षेत्र तथा असंगठित क्षेत्र। संगठित क्षेत्र में निश्चित आमदनी, बीमा, काम करने की निश्चित अवधि, स्वास्थ्य सुविधा, छुट्टी, यात्रा भत्ते की सुविधा दी जाती है।

असंगठित क्षेत्र में ठीक इसके विपरीत अनिश्चित आमदनी और अन्य सुविधाएँ नदारद हैं। भारत के अधिकांश लोग इसी असंगठित क्षेत्र से रोजगार हेतु जुड़े हैं। जैसे – छोटे तथा मझौले कारख़ाने, कुटीर उद्योग, हस्तिशल्प। जो कि प्रत्यक्ष रूप से तो दिखता नहीं है, पर इनका भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) को संभालने में काफ़ी बड़ा योगदान है। जबतक भारत का असंगठित क्षेत्र मजबूत है, तबतक भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत है। अगर मैं भारत की प्रधानमंत्री होती तो असंगठित क्षेत्र के प्रोत्साहन के लिए ज्यादा से ज्यादा लोन का प्रावधान करती और श्रम क़ानून के द्वारा श्रम सुधार करवाती। जिससे श्रमिकों को स्थायी रोज़गार सुरक्षा मिल सके।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, हमारे लोकतंत्र के चार स्तम्भ हैं – न्यायपालिका, कार्यपालिक, विधायिका और मीडिया। वैसे तो चारों स्तम्भों का अपना महत्व है, किंतु मैं न्यायपालिका को और मजबूत करना चाहुँगी, क्योंकि न्यायपालिका में हर-एक नागरिक की आस्था रहती है। उसे विश्वास होता है कि चाहे कोई भी अन्याय उसके साथ हो, चाहे कोई भी दोषी हो, अदालत से उसे निराशा नहीं होगी। मुझे आज़ भी याद है, जब 2016 में भारत के मुख्य न्यायाधीश (पूर्व) श्री टी.एस. ठाकुर एक सभा को संबोधित करते हुए रो पड़े थे। उनकी व्यथा आज भी प्रासंगिक है। निचले और ऊपरी अदालतों में काफ़ी सारे केस यूँ ही लंबित पड़े हुए हैं। कितने ही कैदी जेलों में हैं, जो निर्दोष हैं। जो सालों साल से जेलों में अपनी आज़ादी के लिए तरस रहे हैं। अंदाज़ा ये है कि अगर न्यायालय हर साल औसतन एक लाख मामले निपटा भी ले, तो अगले साल फिर एक लाख मामले आ जाते हैं। जजों की कमी के कारण बहुत सारे मामले अनछुए ही रह जाते हैं। यदि मैं प्रधानमंत्री बनती हूँ तो निचली और ऊपरी अदालतों के रिक्त पड़े पदों पर यथाशीघ्र नियुक्ति करवाती।

हमारा भारत कृषि प्रधान देश है, किंतु हमारे यहाँ किसानों के आत्महत्या के मामले अक्सर पढ़ने में आ जाते हैं। कुछ वर्ष पहले मैंने समाचारों में पढ़ा कि महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में 10-15 वर्षों से बारिश ही नहीं हुई। किसान खेती के लिए बैंकों से कर्ज़ तो ले लेते हैं, किंतु सही पैदावार ना होने के कारण घाटा हो जाता है और अंत में उनके पास आत्महत्या के आलावा कोई चारा नहीं बचता है। मैं जितना संभव होता, उनके कर्ज़ माफ़ कर देती। उनके लिए अच्छे से अच्छे बीज, खाद और आधुनिक उपकरण सस्ते ब्याज़ दर पर उपलब्ध करवाती। जल वितरण प्रणाली सहित सिचाईं साधनों की उपलब्धता पर विशेष ध्यान दिलवाती। किसान का बेटा कभी किसान नहीं होना चाहता, क्योंकि जितनी मेहनत खेती में है, उतना उन्हें लाभ नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप किसान की अगली पीढ़ी खेती से दूर रहकर कुछ अलग रोज़गार तलाश करती है।

मेरा पूर्ण प्रयास रहेगा कि मैं कृषि को पैदावार और मुनाफ़े में इतना आकर्षक बना दूँ ताकि किसान का पुत्र अपनी रोज़गार की संभावनाएँ खेती में ख़ुशी से तलाश कर पाएँ।

अब एक ऐसा रोग, जो किसी भी देश की प्रगति में बाधक है – भ्रष्टाचार। इस विषय में मैं ज्यादा सचेत रहना चाहूँगी। देश के किसी भी क्षेत्र को चाहे वह शिक्षा प्रणाली, व्यापार, खेल जगत, न्याय प्रणाली, विधायिका, कार्यप्रणाली हो। यदि भ्रष्टाचार है तो पूरे देश और तंत्र को दीमक की तरह चर जाती है। कोई भी कार्य सही समय पर निष्पक्ष रूप से नहीं हो सकता। इसके लिए मैं अपने निरीक्षक समूह को हमेशा चौकन्ना रखुँगी।

अंत में मैं अपने कलम को यहीं विराम देते हुए कहना चाहूँगी कि सभी भारतवासी अपनी विविध सभ्यता, संस्कृति और आत्मगौरव के प्रति श्रद्धा की भावना रखें। एक दूसरे के प्रति सहनशील बनें। देश को अपना छोटा से छोटा योगदान करें। किसी भी समय, कोई भी सत्तापक्ष में क्यों ना हो, हम अपने मूल नागरिक कर्तव्यों को ना भूलें तथा इसका पालन करते रहें।

अर्धांगिनी - श्री संजीव कुजुर वरिष्ठ प्रबंधक (इलेक्ट्रिकल) एल्यूमिना परिशोधक, दामनजोड़ी





# कौशल विकास – कुशल भारत

# निर्मल कुमार राउत

2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सत्ता में आते ही भारत के विकास के लिए अनेक कार्यक्रम शुरू किए। यथा — डिजीटल इंडिया, मेक इन इंडिया आदि। इन कार्यक्रमों के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने स्वप्न "स्किल इंडिया" को नई दिल्ली में "राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन" के रूप में शुरू किया। जिसमें स्पष्ट किया गया कि ये सरकार की गरीबी के ख़िलाफ़ एक जंग है और भारत का प्रत्येक गरीब और वंचित युवा इस जंग का एक सिपाही है। इस योजना की घोषणा भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 15 जुलाई 2015 को 'अंतर्राष्ट्रीय युवा कौशल दिवस' पर की थी। इस योजना का मुख्य लक्ष्य देश के लोगों को अलग-अलग क्षेत्रों में प्रशिक्षण देकर उनकी कार्यक्षमता व दक्षता को बढ़ावा देना था। इस प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप अधिक से अधिक युवा रोजगार का सृजन कर रहे हैं।

# कौशल विकास योजना का लक्ष्य:

इस योजना का मुख्य उद्देश्य भारत के लोगों को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित करके उनकी कार्यक्षमता को बढ़ावा देना है। मुख्यरूप से कौशल विकास योजना का उद्देश्य भारत के युवाओं के कौशल के विकास के लिए उन क्षेत्रों में अवसर प्रदान करना है, जो कई वर्षों से अविकसित हैं। इसके साथ ही साथ विकास हेतु सम्भाव्य नए क्षेत्रों की पहचान करके उन्हें विकसित करने का प्रयास करना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में "कौशल विकास योजना, केवल ज़ेब में रूपए भरना ऐसा नहीं है, बल्कि गरीबों के जीवन को आत्मविश्वास से भरना है।" इस प्रकार इसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

- गरीबी के कारण जो बच्चे शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं, उनके अंदर छिपे कौशल को विकसित करना।
- योजनाबद्ध तरीके से गरीब नौजवानों को संगठित करके उनके कौशल को सही दिशा प्रदान करके गरीबी का उन्मूलन करना।

- गरीबी को दूर करने के साथ-साथ गरीब लोगों, परिवारों तथा युवाओं में नई क्षमता का सृजन करके आगे बढ़ने का आत्मविश्वास लाना तथा देश में नयी ऊर्जा का संचार करना।
- सभी राज्यों को संगठित करके आई.आई.टी. की इकाईयों के माध्यम से दुनिया में स्वयं को स्थापित करना।
- भारत की लगभग 65% जनसंख्या (जिनकी आयु 35 वर्ष से कम है) को वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए कौशल एवं अवसर प्रदान करना।
- देश के युवा एवं नौजवानों के लिए रोजगार उपलब्ध कराने के लिए, उन्हें रोज़गार के योग्य बनाने के लिए एक पूरी व्यवस्था के निर्माण को देश की प्राथमिकताओं में शामिल करना।
- आने वाले दशकों में पूरी दुनिया में कार्यकुशल जनसंख्या की आवश्यकता को पूरा करने के लिए विश्व के रोज़गार बाज़ार का अध्ययन करके, उसके अनुसार देश के युवाओं को प्रत्येक क्षेत्र में आज से ही कुशल बनाना।
- देश के युवा जिस कौशल (जैसे:- गाड़ी चलाना, कपड़े सिलना, अच्छी तरह से खाना बनाना, साफ़-सफ़ाई करना, मैकेनिक का काम करना, बाल काटना आदि) को परम्परागत रूप से जानते हैं, उसके उस कौशल को और निखारकर व प्रशिक्षित करके उस व्यक्ति के कौशल को सरकार द्वारा मान्यता प्रदान करना।
- कौशल विकास से उद्यमिता और मूल्य संवर्धन को बढ़ावादेना।
- सभी तकनीकी संस्थाओं को विश्व में बदलती तकनीक के अनुसार गतिशील बनाना।



### कौशल भारत मिशन के लाभ:

कौशल भारत मिशन के अन्तर्गत मोदी सरकार ने वंचित युवाओं को प्रशिक्षित करके बेरोजगारी की समस्या और गरीबी को खत्म करने का लक्ष्य रखा है। इस मिशन का उद्देश्य उचित प्रशिक्षण के माध्यम से युवाओं में आत्मविश्वास लाना है, जिससे उनकी उत्पादकता में वृद्धि हो सके। इस योजना के माध्यम से सरकारी, निजी और गैर-सरकारी संस्थानों के साथ-साथ शैक्षिक संस्थाएँ भी एकजुट होकर कार्य करेंगी। इस मिशन के कुछ मुख्य लाभ निम्नलिखित हैं:

- कौशल विकास योजना के माध्यम से युवाओं को प्रशिक्षित करके भारत में बेरोज़गारी की समस्या के निवारण में सहायता।
- उत्पादकता में वृद्धि।
- भारत में गरीबी खत्म करने में सहायक।
- भारतीयों में छिपी हुई प्रतिभा को निखारना।
- राष्ट्रीय आय के साथ-साथ प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि।
- भारतीयों के जीवन स्तर में सुधार।

### कौशल विकास योजना की विशेषता:

इस योजना का लक्ष्य भारत में तकनीकी शिक्षण प्रक्रिया में सुधार लाकर उसे विश्व मांग के अनुरूप ढालना है। इस योजना की घोषणा के समय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भाषण देते हुए कहा था कि भारत में परम्परागत शिक्षा पाठ्यक्रम प्रचलन में है, जिससे हम विश्व में तेजी से हो रहे परिवर्तनों के साथ अपने आप को गतिशील नहीं बना पाए और आज भी बेरोज़गार हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने शैक्षणिक पाठ्यक्रम में विश्व मांग के अनुसार बदलाव लाएँ। आने वाले दशकों में किस तरह के कौशल की मांग सबसे अधिक होगी, उसका अध्ययन करके अपने देश में

उस अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार, यदि युवाओं को प्रशिक्षित करेंगे तो भारत के युवाओं को रोज़गार के सबसे अधिक अवसर मिलेंगे। इस तरह कौशल भारत – कुशल भारत एक आन्दोलन है, निक सिर्फ़ एक कार्यक्रम।

इस योजना के तहत कराई जाने वाली सभी तरह की ट्रेनिंग बहुत ही संजीदगी से कराई जाएगी। विभिन्न क्षेत्रों में ट्रेनिंग प्राप्त करने के लिए विभिन्न योग्यताओं की आवश्यकता होगी। अत: किसी भी क्षेत्र में प्रशिक्षण लेने से पूर्व योग्यता की जाँच की जाएगी।

इस योजना के अंतर्गत भारत सरकार के विभिन्न योजनाओं में आवश्यक कार्यकर्ताओं को देखते हुए प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण के बाद युवाओं को विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे – मेक इन इंडिया योजना, डिजीटल इंडिया प्रोजेक्ट, स्वच्छ भारत अभियान आदि के अंतर्गत नौकरी दी जाएगी।

एक बार प्रशिक्षण खत्म हो जाने पर प्रशिक्षित युवाओं को ₹ 8000/- और प्रमाण-पत्र दिया जाएगा। यह प्रमाण – पत्र सभी जगहों पर मान्य होगा, किन्तु इसे प्राप्त करने के लिए कोर्स के अंत में ली जाने वाली परीक्षा में उत्तीर्ण करना आवश्यक होगा।

इस योजना की एक विशेष बात यह है कि इस योजना के ब्राण्ड एंबेसडर सचिन तेंदुलकर हैं।

भारत के लिए सबसे पहले यदि कोई प्राथमिकता है तो देश के नौजवानों के लिए रोजगार उपलब्ध कराना है। रोज़गार के योग्य नौजवानों को तैयार करने के लिए एक पूरी व्यवस्था तैयार की जानी अपेक्षित है। इस मिशन के द्वारा इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रयास करना है। भारत विश्व के लिए कुशल कार्यबल उपलब्ध कराने वाला विश्व का सबसे बड़ा देश बन सकता है।

> वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिक) एल्यूमिना परिशोधक, दामनजोड़ी





# भ्रष्टाचार मुक्त भारत

# सुप्रिया खोसला

भ्रष्टाचार एक ऐसा शब्द है जिसके आते ही आँखों के सामने एक ऐसी रूपरेखा तैयार हो जाती है, जो कहीं न कहीं हमारे न्याय, कानून, सरकारी व्यवस्था पर सवाल उठाती है। इससे पूरे तंत्र के विरुद्ध जाकर सिर्फ अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए लोग किसी भी हद तक जा सकते हैं; जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसका एक कारण यह है कि, लोग कड़ी मेहनत किए बिना, बड़ी रकम पाना चाहते हैं; लेकिन हम ऐसी बुरी प्रथा को प्रयोग में लाकर कहाँ जा रहे हैं? निश्चित रूप से विकास से विनाश की ओर।

भ्रष्टाचार हमारे देश के लिए किसी महामारी से कम नहीं है, इसके कारण आज हमारा भारत विकास के बजाए, पतन की ओर आगे बढ़ रहा हैं। हमारे भारत में, अब कई लोगों के जीवन में भ्रष्टाचार दिनचर्या में शामिल हो गया है। क्योंकि, जब भी वे किसी कार्य को करवाने जाते हैं तो, उसके लिए उन्हें रिश्वत देनी पड़ती है। रिश्वत के बिना कार्य होना ज्यादातर मुश्किल हो गया है। हमारे देश के लिए यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। अगर यह स्थिति ऐसी ही चलती रही तो हमारा देश प्रगति नहीं कर सकता।

इस परिस्थित पर गंभीरता से विचार करने पर कई कारणों से हम परिचित होते हैं। और इतना तो तय है कि, भ्रष्टाचार को हटाने के लिए सरकार को कड़े कानून की व्यवस्था करनी होगी। पर यह कितना सफल होगा यह बहस की बात है। क्योंकि, नीति-नियम की बागडोर संभालने वाले नेता जी ही अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए कई बड़े-बड़े घोटाले कर देते हैं। जिसके कारण हमारी पूरी अर्थव्यवस्था गड़बड़ा जाती है और इसका असर कई सालों तक बना रहता है। यदि ऐसे ही घोटाले होते रहे तो हमारा देश कभी भी विकसित देश नहीं बन सकता। जब भी कोई टेंडर या भर्ती निकलती है तो, उसपर राजनीतिक प्रभाव हमेशा बना रहता है। यह टेंडर और नौकरी कितने ही रिश्तेदारों को बिना किसी योग्यता के भी प्रदान कर दी जाती है। जिस कारण हमारे देश की अर्थव्यवस्था ऐसे लोगों के हाथों में चली जाती है, जिन्हें उसके बारे में कुछ पता ही नहीं होता है। असर यह होता है कि, जो अमीर है वह और भी अमीर होता चला जाता है और महंगाई एवं अव्यवस्थित आर्थिक स्थिति के कारण गरीब और भी गरीब होता चला जाता है। इसलिए जरूरी है कि, चुनाव के समय हम ईमानदार राजनेताओं का चुनाव करें, जो भी व्यक्ति ऐसे भ्रष्टाचार और घोटालों में लिप्त हों; उन्हें हम कभी भी वोट न दें। क्योंकि, ऐसे लोगों को वोट देकर चुनने से, उनका हौसला और भी अधिक बुलंद हो जाता है, वे अधिक स्वतंत्र होकर घोटाले करने लगते हैं।

हमारे देश में शिक्षा का बहुत अभाव है। हमारे देश में केवल 74% लोग ही पढ़े लिखे हैं और ग्रामीण इलाकों में तो यह स्थिति और भी खराब है। भारत में भ्रष्टाचार के फैलने का एक बड़ा कारण अशिक्षा भी है। जब तक लोग शिक्षित नहीं होंगे, तबतक उन्हें ठीक से पता भी नहीं चलता है कि, उनके साथ धोखाधड़ी भी हो रही है। हमें गाँव-गाँव तक के लोगों को नुक्कड़ नाटक और सभाएँ करके जागरूक करने की जरूरत है।

दूसरी बड़ी बात यह है कि, बच्चों के जीवन में तीन महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं- माता, पिता और शिक्षक। वे जैसा गुण देते हैं, आगे चलकर बच्चे उसी का पालन करते हैं। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। अकसर छोटी-छोटी बातों में माता-पिता द्वारा अनजाने ही झूठ बोला जाता है, जो कि बच्चों पर गलत असर डालता है। बच्चे आगे चलकर अपनी सुविधा के अनुसार झूठ बोलने लगते हैं। बस यहीं से होती है, भ्रष्टाचार की शुरूआत। यदि माता- पिता और शिक्षक किसी भी स्थिति में झूठ न बोलने की सलाह दें, तो निश्चित रूप से वह बच्चा हमेशा सच बोलेगा, जो कि भ्रष्टाचार को रोकने में काफी कारगर साबित होगा।

वर्तमान समय में यह सोचनीय बात है कि, क्या भारत को सभी बुराइयों से मुक्त बनाना है? तो क्या सरकार के प्रयास से ही यह संभव हो सकता है? मेरा मानना है नहीं। जब तक हम इंसान अपने अधिकारों, अपने हक के लिए निडर होकर



सामने नहीं आएंगे, तो मैं नहीं समझती कि, भारत इस शिकंजे से बाहर निकल पाएगा। हमें हर छोटी-छोटी बात का खयाल रखना होगा-बिना गाड़ी के कागज या हेलमेट के गाड़ी लेकर बाहर न निकलें, बिना टिकट के यात्रा न करें, कहीं किसी स्थान पर किसी कारण के गलत रहने पर अनावश्यक खुद को सही साबित करने का प्रयास न करें। इस तरह यदि, खुद में सुधार लाकर-दूसरों को सुधरने के लिए प्रेरित करें, तो अपने छोटे प्रयास से भी हम बड़े बदलाव की शुरूआत कर सकते हैं। ऐसे छोटे-छोटे प्रयासों से भ्रष्टाचार पर काबू पाने में मदद मिल सकती है और भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण का आरंभ किया जा सकता है।

आज भी मुझे नानी जी द्वारा कहीं बात याद आती है कि, "जीवन भले ही कम जीया जाए, पर जो भी जिया जाए बड़ा जिया जाए।" अतः जरूरी है कि, हर व्यक्ति अपने सम्मान और हक के लिए खुद सामने आए। अहम बात यह है कि, अपने विचारों को शुद्ध करें, गंगा सा पावन करें। कोई कार्य कठिन नहीं होता, जरूरत बस इतनी भर है कि, कोशिश की जाए। तो चलिए सभी कोशिश करते हैं, सम्मिलित प्रयास से कोशिश करते हैं। क्योंकि, "कोशिश करने वालों की कभी

हार नहीं होती।" जब हम अपने हक के लिए बुराइयों के खिलाफ़ आवाज उठाएंगे तभी तो भारत आगे बढ़ेगा। और यह पंक्तियाँ सार्थक होंगी कि.

जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा, वह भारत देश है मेरा,

जहाँ सत्य, अहिंसा और धर्म का पग-पग लगता डेरा, वह भारत देश है मेरा।।

भ्रष्टाचार एक बड़ी बुराई है। यह एक संक्रामक रोग की तरह फैली हुई है। हर व्यक्ति को चाहिए कि, वह अपने स्तर पर भ्रष्टाचार रोकने का प्रयास करे। तभी हम इसे समाज से उखाड़ सकते हैं। सरकार को चाहिए कि, वह देश में फैली असमानता को कम करे, तभी जाकर हम भ्रष्टाचार को खत्म कर सकते हैं। स्कूल, कॉलेज में भ्रष्टाचार को खत्म करने की विशेष शिक्षा देनी होगी।

> पुत्री – श्री अनिरूद्ध खोसला सहायक प्रबंधक (सामग्री) एल्यूमिना परिशोधन, दामनजोड़ी

	विश्व हिन्दी सम्मेलन श्रृंखलाएँ				
क्रम	तिथि	नगर	देश		
1	10-14 जनवरी 1975	नागपुर	💶 भारत		
2	28-30 अगस्त 1976	पोर्ट लुई	💳 मॉरिशस		
3	28-30 अक्टूबर 1983	नई दिल्ली	🚢 भारत		
4	2-4 दिसम्बर 1993	पोर्ट लुई	💳 मॉरिशस		
5	4-8 अप्रैल 1996	त्रिनिडाड-टोबेगो	💌 त्रिनिदाद एवं टोबेगे		
6	14-18 सितम्बर 1999	लंदन	踹 यूनाइटेड किंगडम		
7	5-9 जून 2003	पारामरिबो	🚾 सूरीनाम		
8	13-15 जुलाई 2007	न्यूयार्क	💻 संयुक्त राज्य		
9	22-24 सितम्बर 2012	जोहांसबर्ग	🔀 दक्षिण अफ़्रीका		
10	10-12 सितम्बर 2015	भोपाल	💶 भारत		
11	18-20 अगस्त 2018	पोर्ट लुई	💳 मॉरिशस		





# कोरोना महामारी: देशभक्ति दिखाने का एक बेहतरीन अवसर

# अरविंद कुमार सिंह

कोरोना एक ऐसा वायरस है, जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने महामारी घोषित किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार ये वायरस चीन के वुहान शहर में नवम्बर 2019 में चमगादड़ों के द्वारा मानव शरीर में आया था। कोरोना वायरस संक्रमण करता है, जिसके कारण सूखी खांसी, सर्दी, बुखार, साँस लेने में तकलीफ़ जैसी परेशानियाँ होती हैं। आज संसार के लगभग सभी देश इस महामारी से पीड़ित हैं। इस बीमारी से इलाज़ के लिए अभी तक किसी ठोस दवा का ईजाद नहीं हुआ है। इस वायरस का ज्यादातर शिकार 50-60 से अधिक उम्र के व्यक्ति होते हैं। जो व्यक्ति किसी पुराने रोग जैसे – मधुमेह, गुर्दे का रोग या दिल की बीमारी जैसी समस्या से ग्रस्त हैं, उन पर इस संक्रमण का असर अधिक होता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन और स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा इस संक्रमण से बचाव के लिए कुछ ख़ास निर्देश ज़ारी किए गए हैं:-

- दो गज़ की सामा<mark>जिक</mark> दूरी बनाए रखें।
- अपने हाथों को 20 सेकेण्ड तक धोएँ।
- अपने मुँह और नाक को अच्छी तरह से मास्क से ढ़कें।
- किसी संक्रमित व्यक्ति के संम्पर्क में आने पर ख़ुद को 14 दिन तक अलग रखें।

कोरोना वायरस से आज पूरा देश लड़ रहा है। पूरे संसार के सभी विकसित देश भी इससे जुझ रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक अब तक पूरे विश्व में लगभग 7.36 करोड़ इससे संक्रमित हो चुके हैं, जिनमें से 4.17 करोड़ लोग ठीक हो चुके हैं और 16.4 लाख लोग इस बीमारी से दम तोड़ चुके हैं। आज भी 2 करोड़ लोग इस बीमारी से लड़ रहे हैं।

कोरोना वायरस से देश को बचाने के लिए भारत सरकार ने कुछ ठोस कदम उठाए हैं। जैसे कि –

- पूरे देश में लॉकडाउन लगाया गया। जिस दौरान सिर्फ ज़रूरी चीजों को खरीदने के लिए ही घर से बाहर निकलने की छट दी गयी।
- रेल, हवाई अथवा बस की यात्रा को प्रतिबंधित कर दिया, जिससे कि लोगों के बीच सामाजिक दूरी का पालन हो सके।
- आज भी देश में 3.32 लाख सक्रिय मामले हैं। हर राज्य और ज़िले में कोरोना के लिए विशेष अस्पताल बनाए गए हैं, ताकि कोरोना मरीज़ों का इलाज खास तरीके से किया जा सके।
- आज हमारे देश के जो गरीब वर्ग के लोग हैं, उनके रोजगार पर काफ़ी बुरा असर पड़ा है। इस कारण से सरकार ने कई राहत पैकेजों की घोषणा की है, ताकि लोग भूखमरी से ना मरे।
- इस महामारी के दौरान किसी भी राज्य या ज़िले में अनाज या दवाई की कमी नहीं हुई। सरकार ने ज़रूरी चीज़ों के परिवहन का विशेष ध्यान रखा।
- सभी स्कूल, कालेज, धार्मिक स्थल, सिनेमा हॉल, क्लब तथा मनोरंजन गतिविधियों को पूर्ण रूप से बंद कर दिया गया ताकि इस संक्रमण को रोका जा सके।

आज हमारा देश बड़ी आर्थिक समस्या से गुज़र रहा है। आने वाले दिनों में ये और भी भंयकर हो सकता है। इसलिए हमें देशभक्ति दिखाने का इससे और अच्छा अवसर मिल नहीं सकता है। हम इस महामारी के वक़्त में निम्न रूप से अपनी देशभक्ति दिखा सकते हैं।

दिशा-निर्देशों का पालन – विश्व स्वास्थ्य संगठन और स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों का अच्छे से पालन करें। इससे हम अपने आप को तो बचाएंगे ही साथ में औरों को भी संक्रमण से बचा सकते हैं।

आत्मनिर्भर भारत – आज हमारे प्रधानमंत्री जी पूरे देश से



यह निवेदन कर रहें कि देश को आत्मनिर्भर बनाने में मदद करें। आत्मनिर्भर भारत का तात्पर्य है कि दुनिया के साथ जुड़े रहते हुए आर्थिक विकास के साथ लोगों के जीवन की गुणवत्ता सुधारना और भारत के भविष्य का पुनर्निर्माण करना।

कोरोना योद्धा- आज इस महामारी से लड़ने में सबसे आगे हमारे देश के स्वास्थ्यकर्मी और पुलिस बल खड़े हैं। हमें हर स्वास्थ्य कर्मी की छोटी मोटी असुविधा का ख़्याल रखना चाहिए ताकि वे अपना कर्तव्य निर्वहन पूरी निष्ठा से कर सकें।

आयात पर प्रतिबंध — वर्ष 2019 में भारत ने 35 लाख करोड़ रुपए का सामान आयात किया है, जबिक निर्यात मात्र 10 लाख करोड़ का रहा है। हम इससे अंदाज़ा लगा सकते हैं कि हम विदेशी सामानों पर कितना निर्भर हैं। इसलिए जितना हो सके, हम आयात पर रोक लगाएँ। इससे हमारे देश के व्यापार संतुलन निश्चित ही बेहतर होगा।

पी.एम.केयर्स फंड – हम इस महामारी से लड़ने के लिए सरकार को अपनी क्षमता हिसाब से दान दे सकते हैं। एक महान देश वही होता है, जिसके देशवासी अपने देश को मुसीबत के समय में मदद करके उसे उस मुसीबत से बाहर निकाल सकें। उदाहरण के तौर पर जब साउथ कोरिया पर बहुत ज्यादा कर्ज हो गया था, तब वहाँ के देशवासियों ने स्वेच्छा से इतना दान किया कि देश कर्ज़ मुक्त हो गया। वोकल फॉर लोकल – हमारे प्रधानमंत्री जी द्वारा चलाए गए इस मुहिम का हमें जमकर समर्थन करना चाहिए। हमें अपने देश के बने सामानों की तारीफ़ करनी चाहिए। जिससे की लोग ज़्यादा से ज़्यादा इन वस्तुओं को ख़रीदकर देश की आर्थिक मदद कर सके।

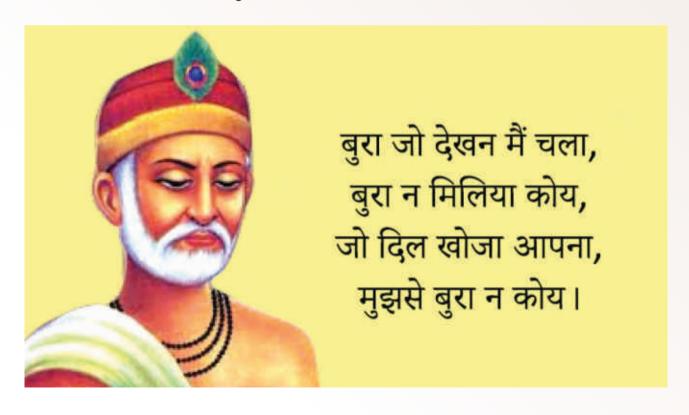
गरीबों की मदद – यदि आप सक्षम हैं तो आपको निश्चित ही अपने आसपास के ग़रीब वर्ग के लोगों के लिए भोजन के प्रबंध की चिंता करनी चाहिए। क्योंकि आजकल बहुत से ऐसे लोग हैं, जो बेरोज़गार हो गए हैं और उन्हें खाने के लिए भी तरसना पड रहा है।

इस कोरोना महामारी से देश को बचाने के लिए हर एक देशवासी को मिलकर लड़ना होगा, तभी हम एक कोरोना मुक्त भारत को देख सकेंगे।

"भाईचारा तो निभाते रहेंगे, अभी तो बस देश को बचाना है। कोरोना योद्धा के सम्मान में हर नियमों का पालन करना है। ये है एक महायुद्ध, जिसमें भारत को आत्मनिर्भर बनाना है।

कोरोना से मुक्त कर फिर से, इस देश को प्रगति के मार्ग पर लाना है।"

> प्रबंधक (सामग्री) केंद्रीय भण्डार, एल्यूमिना परिशोधक दामनजोड़ी







# कोविड काल में महिलाओं का हाल

अखिल कुमार

यूँ तो कोरोना पूरी मानव जाति के लिए विनाशकारी साबित हुआ है किंतू इस कोरोना की अवधि में महिलाओं को जिस प्रताडना एवं दुःख से गुजरना पडा है शायद पुरुष समाज को उसकी अनुभूति भी न हुई हो। कोरोना काल में खास करके लॉकडाउन के समय महिलाओं पर होने वाले घरेलू हिंसा में आश्चर्यजनक वृद्धि दर्ज की गई। महिलाओं की आर्थिक, मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक शोषण की कहानियाँ सामने आई। समाचारों के माध्यम से कई भयावाह दृश्य देखने को मिले। जैसे स्टेशन पर पड़ी मृत माँ के शरीर से चादर खींच कर उसको जगाने की कोशिश करता एक अबोध बच्चा, ट्रॉली पर सोते हुए बच्चे को सौ किलो मीटर तक खींच कर अपने साथ ले जाती माँ. शराब के नशे में अपने दो बच्चे की माँ को पीटता सरकारी अधिकारी या फिर नौकरी छूट जाने और प्रेम में धोखा खाकर आत्महत्या करती युवा लड्कियाँ। एक तरह से इस महामारी ने समाज के इस विकृत रूप को प्रत्यक्ष रूप से प्रकट कर दिया है। इस महामारी का महिलाओं पर विशेष आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव रहा।

### आर्थिक प्रभाव

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की माने तो भारत की 81 प्रतिशत महिलाएँ अनौपचारिक क्षेत्र में काम करती हैं, जो कि इस महामारी के दौरान खास करके इस लॉकडाउन में सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है। चाय की दुकान चलाने वाली, सब्जी की फेरी लगाने वाली, गिलयों में चूड़ी बेचने वाली इन सबका कारोबार बंद हो गया। सबसे बुरा हाल कामवाली बाईयों का हुआ। कोरोना फैलने के डर से लोगों ने इनको काम देना बंद कर दिया। यही नहीं सामाजिक दूरी का अनुपालन करने की वजह से सेल्फ हेल्प ग्रुप भी ठप्प हो गया। जिससे गरीब और कमजोर वर्ग की महिलाओं का रोजगार छिन गया।

ऑक्सफोम इंडिया की सर्वे से पता चला कि महिलाओं के नौकरी खोने से देश को भारी घाटा हुआ है जो कि अनुमानतः हमारे सकल घरेलू उत्पाद का 8% आंका गया है।

### सामाजिक प्रभाव

अप्रवासी औरतों को बड़े शहरों से ग्रामीण इलाकों की तरफ कूच करना पड़ा। इस दौरान बलात्कार, जबरन शादी, अपहरण की घटनाओं की खबरें आती रही। लॉकडाउन की वज़ह से या फिर बाद में वर्क फ्रॉम होम मिलने से घर पर ही परिवार के सभी सदस्यों का रुकना हुआ जिससे घर के महिला सदस्यों का दैनिक कार्य बढ़ गया और कामवाली बाई के ना होने से मुसीबत दोगुनी हो गई।

इसी दौरान महिलाओं पर घरेलू हिंसा इतनी बढ़ गई की राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा रेखा शर्मा जी को सार्वजनिक रूप से इस ख़तरे को देश की जनता के सामने रखना पड़ा। बाद में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव ने भी इस बात का अनुमोदन करते हुए इसे "छाया महामारी" का नाम दे डाला।

कोरोना काल में महिलाओं से जुड़ी एनजीओ का निष्क्रिय होना, पुलिस बल का कोरोना योद्धाओं के रूप में व्यस्त होना भी घरेलू हिंसा में इजाफ़े का कारण रहा। चिकित्सकीय सुविधा भी पीड़ित महिलाओं तक पहुँचना कठिन रहा क्योंकि ज्यादातर चिकित्सकीय सेवाएँ कोरोना से निपटने में लगी रही। गर्भवती महिलाओं को खासी परेशानी से गुजरना पड़ा। विशेषकर एकल परिवार की गर्भवती महिलाओं को कामवाली बाई ना मिलने से ज्यादा घरेलू कार्यों का बोझ उठाना पड़ा।

### सरकारी प्रतिक्रियाएँ

सरकार ने भी महिलाओं की परेशानी को संज्ञान में लिया और उनके लिए जगह-जगह पर सहायता केंद्र खोले ताकि पीड़ित महिलाओं को चिकित्सकीय, कानूनी या सामाजिक मदद मिल सके। इसके लिए स्थानीय पुलिस, चिकित्सालय एवं नालसा (राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण) को सहयता केंद्र से जोड़ा गया। कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म विकसित किये गये।

### महामारी से मिली सीख

कोविड काल में महिलाओं के हालात से सरकार एवं समाज को सबक लेनी चाहिए और व्यवस्था को इतना सुदृढ़ बनाना चाहिए कि महिलाओं को शोषण और भयमुक्त वातावरण मिल सके। उसके लिए प्रशासन के हर स्तर पर लिए जाने वाले निर्णयों में महिला निर्णायकों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। प्रशासन के हर स्तर पर डाटा उपलब्ध हो। गर्भवती एवं दिव्यांग महिलाओं के लिए आपातकालीन कोष का निर्माण किया जाए।

उप प्रबंधक (यांत्रिक) ग्र.वि.सं., अनुगुळ





# कहना जरूरी है

# बि. सुजया लक्ष्मी

वक्त किसी को वक्त नहीं देता इसलिए जिंदगी में, जब जो काम करना हो, या किसी से कुछ कहना हो, तो कहना जरूरी है। कल किसने देखा है? फिर वह उस काम के लिए या, बात के लिए नहीं मिलेगा। इसलिए कभी जो मन में आए कोई बात तो, कहना जरूरी है। पिता का किया कुछ काम जो दिल को छु जाए, तो जाकर गले लगाना जरूरी है। माँ अगर बनाए तुम्हारे मन का कुछ, तो उनके हाथों को चूम लेना जरूरी है। जब पत्नी अपने को भुलाकर, घर सँवारती नज़र आए. तो उसे सराहना जरूरी है। पति जो दुनिया से जूझकर घर आए

तो दो पल हँसकर गुजारना जरूरी है। गर बच्चे कोई भूल कर दें, जो गले लगाकर यह बताना जरूरी है, व्यस्त हुँ पर, एक-पल भी तुमसे दूर नहीं, जड़े कितनी भी मजबूत हों रिश्ते के, उनके पनपते रहने के ख़ातिर. रिश्तों के मजबूती का वक्त-बेवक्त इज़हार भी जरूरी है। कभी जो मन में आए कोई बात तो. कहना जरूर, वक्त का कोई भरोसा नहीं, साथ कब-किसका छट जाए, कोई दोस्त न जाने कब रूठ जाए, उससे पहले दिल की बात. उस तक पहुँचाना जरूरी है। इसलिए मन की बात कहना जरूरी है।

> चार्जमैन ग्रेड - III प्रद्रावक एवं विद्युत संकुल, अनुगुळ





# मेरी प्रिय रचना

# फिरदौस परवीन

पुस्तकें हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनका मनुष्य के जीवन में विशेष स्थान होता है। एक पुस्तक में कई रचनाकारों की रचनाओं का संकलन होता है, तो कहीं किसी पुस्तक में एक ही रचनाकार के कई रचनाओं का। ये रचनाएँ हमारी ऐसी साथी होती हैं, जो हमारे संस्कार, संस्कृति तथा इतिहास का वाहक होती हैं। ये बिना कुछ बोले ही हमारे आने वाली पीढ़ी को हमारे पूर्वजों व हमारे बारे में बिना एक शब्द बोले ही सबकुछ ही बता देती है।

मुझे बचपन से ही पढ़ने का बहुत शौक था। जब कभी समय मिलता पुस्तकालय जाकर अपनी मनपंसद रचनाकारों की रचनाओं को पढ़ लेती। एक दिन शाम को मैं पुस्तक लौटाने और दूसरी पुस्तक के लिए पुस्तकालय गयी थी। जब मैं पुस्तक लौटाकर, किसी दूसरी पुस्तक की तलाश में आलमारी में रखी पुस्तकों को देख रही थी, तभी मेरी नज़र एक कहानी संकलन पर पड़ी, जिसका शीर्षक था – "प्रेमचंद की कालजयी कहानियाँ"। इस कहानी संकलन की प्रथम रचना "ईदगाह" ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। जैसे-जैसे मैं इस कहानी को पढ़ती गयी, मेरी रुचि बढ़ती गई और यह मेरी प्रिय रचना बन गई।

बाल मनोविज्ञान पर अधारित "ईदगाह" कहानी मुंशी प्रेमचंद की उत्कृष्ट रचना है। ईद जैसे महत्वपूर्ण त्यौहार को आधार बनाकर मुस्लिम परिवार का चित्रण करते हुए सचित्र वर्णन इस रचना में देखने को मिलता है। हामिद का चरित्र हमें बताता है कि अभाव के कारण उम्र से पहले बच्चों में कैसे बड़ों जैसी समझदारी आ जाती है।

ईदगाह में एक चार वर्षीय बालक की कहानी बतायी गयी है, जो अपनी बूढ़ी दादी के साथ रहता है। दुबला-पतला लड़का जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेट चढ़ गया था और माँ ना जाने क्यों पीली होती -होती मर गई। उस नन्ही सी जान को तो यही बताया गया है कि उसके अब्बा जान रुपए कमाने गए हैं और अम्मी जान अल्लाह मियाँ के घर से बड़ी अच्छी-अच्छी सी चीजें लाने गयी हैं। इसी कारण हामिद की प्रसन्नता में कोई कमी नहीं है। आशा तो बड़ी चीज़ है और बच्चों की आशा की तो बात ही न करें। इनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है।

हामिद के मित्रों के पास खर्च करने के लिए पैसे ही पैसे हैं, किंतु ख़ुद हामिद के पास खर्च करने को मात्र छ: आने हैं। आकर्षण का भी भला कोई स्थान है। आकाश की सैर कराने वाला हिंडोला, चरखी और अनेक प्रकार के मनभावन खिलौने बच्चों को अपनी तरफ़ खींच रहे हैं।

हामिद बहुत जागरूक व्यक्तित्व वाला लड़का है। वह जानता है कि उसकी दादी को चिमटे की बहुत ज़रूरत है। इसलिए वह मेले में फ़िजूलखर्ची ना करके चिमटा लेना उचित समझता है। जब हामिद चिमटा लेकर आता है, तो उसकी दादी बहुत गुस्सा होती है। जहाँ तक मेरा विचार है, हामिद की उम्र सात या आठ साल के बीच होनी चाहिए, जो कि कहानीकार ने शायद भूलवश चार से पाँच वर्ष कर दी है। मुझे नहीं लगा कि चार से पाँच साल का बालक इतना जागरूक हो सकता है।

यह कहानी हमें बताती है कि बच्चे वास्तविक रूप से मन के सच्चे होते हैं। जिनके अंदर ईश्वर का वास होता है, वे चाहकर भी किसी का दु:ख नहीं देख सकते हैं और चाहे दु:खों का कितना भी बड़ा पहाड़ क्यों ना टूट पड़े, वे हमेशा आशावान होते हैं और आने वाले सुखमय भविष्य की कल्पना में इस तरह से रम जाते हैं कि मानो वे हमेशा सुख की ही परवाह करते हैं, भले ही उस राह में कितने भी काँटे क्यों ना पड़े हो।

पुत्री – श्री कौसर इमाम चार्जमैन ग्रेड -॥ एल्यूमिना परिशोधक, दामनजोड़ी





# राष्ट्र विकास में युवाओं की भूमिका

सुदेश कुमार पटनायक

आज का छात्र कल का नागरिक होगा। इसी के सबल कंधों पर देश के निर्माण और विकास का भार होगा। किसी भी देश के लिए युवक-युवितयाँ उसकी शक्ति का अथाह सागर होते हैं और उनमें उत्साह का सागर बहता है। आवश्यकता इस बात की है कि, इनकी शक्ति का उपयोग सृजनात्मक रूप से किया जाए, अन्यथा ये अपनी शक्ति को विध्वंशकारी कार्यों में लगा सकते हैं। आवश्यक और अनावश्यक माँगों को लेकर उनका आक्रोश बढ़ता ही रहता है। इसलिए आज

का विद्यार्थी जितना कुशल, सक्षम और प्रतिभासंपन्न होगा, देश का भविष्य भी उतना ही उज्ज्वल होगा। इस दृष्टि से विद्यार्थी के कंधों पर अनेक दायित्व आ जाते हैं; जिनका निर्वाह करते हुए वह राष्ट्र-निर्माण की दिशा में अपना महत्त्वपूर्णयोगदान कर सकता है।

> वरिष्ठ प्रबंधक (सामग्री) निगम कार्यालय, भुवनेश्वर



# फूलों के जैसी नारी

बर्नाली अधिकारी

झर झर झरती रहती झरना, कल कल बहती रहती नदियाँ। चुपके से जो खिलती है, सबकी मन को भाती है फूल, धरती की सुन्दरता को बढ़ाती हैं।

चुप रहकर भी खुशबू से अपनी अस्तित्व बताती, अपने रंगो और कोमलता से सबको आकर्षित करती। नए जन्म हो या अंतिम यात्रा, फूल है आवश्यक, मुरझा जाने के बाद उसकी, कद्र रहती नहीं बेशक।

नारी की जीवन भी फूलों के जैसा है, रब ने सारे गुण समेटे नारी को रचा है। सबको करती खुश, त्यागती अपने अरमान, पर क्या मिला उसे उसका वाज़िब सम्मान? व्यवहार में फूलों के गुण अपनाती, पर नहीं है नारी कोमल, नारी का सम्मान ही, देश का उद्धार है, इसी से होती प्रगति, यही मानवता का संस्कार है।

नारी को फूल समझने की भूल न करना खुशी का निरंतर स्रोत है वह, जब जब मिट्टी में गिरे नारी की लाज मानो होती है प्रगति और मानवता की हार।

> अर्धांगिनी - श्री प्रशान्त मन्डल वरिष्ठ प्रबंधक (धातुकर्म) निगम कार्यालय, भुवनेश्वर





# कोई देख तो नहीं रहा न.....

वी. अनुराधा

जब कुछ भी गलती करते तो, तुरंत एक ही विचार आता, "कोई देख तो नहीं रहा न"

स्कूल में पेंसिल चुरा कर, चुपचाप बैग में डाल लेना, "कोई देख तो नहीं रहा न"

दूसरों के टिफिन बॉक्स से चुपके से सैंडविच उठाकर मुँह में ठूस लेना,

"कोई देख तो नहीं रहा न"

आचार की बोतल खोल, आचार धीरे से छत पर ले जाना, "कोई देख तो नहीं रहा न"

बस में चढ़कर पास वाले सीट पर बैठी लड़की को छेड़ना, "कोई देख तो नहीं रहा न"

ऑफीस के चीजों को धीरे से बैग में डाल घर ले जाना, "कोई देख तो नहीं रहा न" सरकारी दफ्तर में काम कराने के लिए अफ़सर को रिश्वत देना,

"कोई देख तो नहीं रहा न"

मोटर गाड़ी को तेज चलाते, रास्ते मे थूक देना, "कोई देख तो नहीं रहा न"

स्वच्छ भारत के बाद भी रात को कूड़ा रास्ते मे फेंक देना "कोई देख तो नहीं रहा न"

बचपन से बुढ़ापे तक गलतियाँ करते खुद को समझाना, "कोई देख तो नहीं रहा न"

हे मानव अब खुद को और कितना नीचे गिराओगे "ईश्वर तो देख रहा है न।"

> कार्यपालक सहायक ग्रेड-। निगम संचार, नालको पत्तन सुविधाएँ विशाखापट्टणम





# अव्यवस्थित

# नादिरा ख़ान

वक्त की पुकार है, उसका ही यह प्रहार है, पुकार कर प्रहार कर, पता नहीं किधर गया।

सोचा कि हुनर सीख लूँ, और काम कुछ भला करूँ, सेवा करूँ मैं वृद्ध की, और वंदना उस ईश की मगर समय नहीं मिला। दिल ने कहा तुझे प्यार है, मैंने कहा पगले ठहर, पहचान लूँ कुछ जान लूं, बस वह पल जो टल गया, और समय बदल गया।

कुछ फुसफुसा के कान में, उसने कहा हम जाएँगे, ऐसी जगह जो शांत हो एकांत हो, स्वर्ग की पहचान हो, मगर समय चला गया।

मैं व्यस्त थी परास्त थी, निपटी तो नई बन गई, यूँ उम्र सारी ढल गई, और समय निकल गया।

अर्धांगिनी - श्री रशीद वारिस समूह महाप्रबंधक (परिचालन व अनुरक्षण)- प्रभारी खान, दामनजोड़ी



# घायल सिपाही का संदेश

# महेंद्र प्रसाद

जब लगी गोलियाँ सीने पर, मानो ऐसा एहसास हुआ, माटी का कर्ज चुकाने को मेरा जीवन साकार हुआ।

भयभीत नहीं हूँ मरने को, न हिम्मत मैंने हारा है, दुश्मन से लोहा ले-लेकर दस-दस को मैंने मारा है।

जब तक सीने में दम है मेरी, बाजू में जब-तक ताकत है, निर्भय रहना यह जानकर तुम, मेरी धरती सही सलामत है।

माँ चरण स्पर्श स्वीकार करो, जीवन की अंतिम बेला में, ले रहा विदा इस दुनिया से, एक शुभ घड़ी की बेला में। गम मत करना मेरे मरने का, तेरा लाल कभी नहीं मर सकता, मैं अजर-अमर सिपाही हूँ, मृत्यू मुझे कभी भयभीत नहीं कर सकता।

न हुआ कलंकित दूध तेरा, न आँचल तेरी मटमैली हुई, मेरा कोटि-कोटि प्रणाम तुझे, तेरी कोख मेरी गोद हुई।

एक लाल तेरा ले रहा विदा, सौ लाल छोड़ कर जाता हूँ, फिर जन्म लुँगा तेरी कोख से मैं, यह वचन तुझे दे जाता हूँ।

> निरीक्षक, के.औ.सु.ब, अनुगुळ



# लिट्टी चोखा - बिहार क्षेत्र का पारंपरिक व्यंजन

# प्रियंका सिंह

हमारा देश भारत अपने क्षेत्रों के अनुसार रहन – सहन, पहनावे और संस्कृति में जितनी विभिन्नता रखता हैं, उतना ही भिन्न – भिन्न होता हैं, यहाँ का खाना भी। हर क्षेत्र के खानपान की अपनी एक विशेषता है, जैसे-: पंजाब में आपको बहुत चटपटा खाना मिलेगा, तो गुजरात में मीठा, वहीं आप महाराष्ट्र में तीखा खाना खाएँगे, दक्षिण की ख़ासियत है - वहाँ का इडली डोसा और अगर आप भारत के बीचों बीच मध्यप्रदेश की तरफ रूख़ करें, तो आपको यहाँ खट्टे मीठे स्वाद का खाना मिलेगा।

आज हम आपको **लिट्टी चोखा** नाम की रेसिपी के बारे में बताएंगे, जो कि हमारे भारत के **बिहार क्षेत्र का पारंपरिक** पकवान है।

'लिट्टी-चोखा' में लिट्टी गेहूँ के आटे और सत्तू से मिलकर बनी चटपटी और तिखी बॉल्स होती हैं और चोखा सभी सब्जियों को उबालकर या भूनकर बनाया जाता है। इसलिए कुछ जगहों पर चोखा को 'भर्ता' भी कहा जाता है। वैसे लिट्टी को पारंपरिक चुल्हे पर बनाया जाता है।

लिट्टी चोखा बनाने की प्रक्रिया को हम निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं।

# लिट्टी अथवा बाटी के बाहरी भाग या परत के लिए आवश्यक सामग्री

- २ कप गेहूँ का आटा
- 1/2 चम्मच अजवाईन
- 2 बड़ा चम्मच घी
- ¾ चम्मच नमक

# भरावन के लिए आवश्यक सामग्री

- 1 कप भूना हुआ सत्तु
- 4 5 पीसी हुई लहसुन की कलियाँ
- १ बारीक़ कटा हुआ मध्यम आकार का प्याज



- 1 पीसा हुआ अदरक
- 2-3 बारीक़ कटी हुई हरी मिर्च
- 1/2 कप बारीक़ कटा हरा धनिया
- ½ चम्मच कलौंजी
- 1 चम्मच नींबू का रस
- लाल मिर्च का अचार अथवा कोई भी अन्य अचार
- नमक स्वादानुसार

# चोखा के लिए आवश्यक सामग्री

- 2 मध्यम आकार के उबले हुए आलू
- १ बड़ा गोलाकार बैंगन
- 3 मध्यम आकार के टमाटर
- 4–5 छीले हुए लहसुन की कलियाँ
- 2-4 कटी हुई हरी मिर्च
- 1/2 पीसा हुआ अदरक
- 2 मध्यम आकार के बारीक़ कटे हुए प्याज
- १ अचार बारीक़ कटा हरा धनिया
- 2 चम्मच सरसों का तेल
- नमक स्वादानुसार



# लिट्टी चोखा बनाने की विधि

यह प्रक्रिया 5 चरणों में पूरी होगी, जो निम्नानुसार हैं:

- आटा गूंथना
- भरावन तैयार करना
- लिट्टी तैयार करना
- चोखा बनाना
- परोसने की विधि

इनका विवरण अग्रलिखित है:

आटा गूंथना: एक बड़े बर्तन में आटा चालकर उसमें अजवाइन और तेल मिलाइए। अब इसमें पानी मिलाकर गुथिये। आटा नर्म होना चाहिए, इस प्रकार गूंथे हुए आटे को गीले कपड़े में लपेटकर रखिए।

भरावन तैयार करना: भूने हुए सत्तु को एक कटोरे में निकालिए, सभी मसाले और पीसा हुआ अदरक, हरी मिर्च, हरा धनिया, नींबू का रस मिलाइये और अब इसे अच्छी तरह मिलाइए। अगर ये मिश्रण बहुत सूखा लगे तो इसमें 1 चम्मच तेल और कुछ पानी की बूँदे डालिए। यह भुरभुरा होना चाहिए।

लिट्टी तैयार करना: आटे से अब लोई बनाइये और अब इसे छोटी रोटी के आकार में बेलिए, परन्तु इसे बेलने में अटावन का प्रयोग बिल्कुल न करें। अब इस प्रकार बेली हुई लोई पर 2 चम्मच भरावन रखिये और अब इसे चारों ओर से बंद कर दीजिये और इसे एक गेंद का आकार दीजिये। अब ये लिट्टी सेंकने के लिए तैयार है। इसी प्रकार अन्य गोले भी बनाइए। अब ओवन को 200 डिग्री पर लाइए और सभी गोलों को एक बेकिंग बर्तन में रखकर ओवन में रखिए और 30–40 मिनट तक पकने दिजीए। बीच–बीच में इसे पलटते रहिए, यह प्रक्रिया 2–3 बार दोहराइए।

चोखा बनाना: चोखा बनाने के लिए सबसे पहले आलू उबालिए और अब इसका छिलका उतारकर रखिए। अब टमाटर और बैंगन को ओवन या स्टोव पर धीमी आँच में तब तक भूनिए, जब तक ये नर्म न हो जाये। अब बैंगन के छिलकें को निकाल लीजिए। अब उबले हुए आलू, टमाटर और बैंगन को अदरक के साथ अच्छी तरह मिलाइए। अब इसमें कटे हुए प्याज, हरा धनिया, कसा हुआ अदरक, नमक, हरी मिर्च और सरसों का तेल अच्छी तरह मिलाइए और अब आपका चोखा तैयार है।

### परोसने की विधि:

अब चोखा को एक कटोरे में रखिए, अब लिट्टी को गर्म पिघले हुए घी में डुबाइए और हरे धनिये की चटनी के साथ परोसिए। आप लिट्टी को बीच में से तोड़कर इसके ऊपर से भी घी डाल सकते हैं, इस प्रकार घी भरावन तक भी पहुँच पाएगा।

तैयार हैं स्वादिष्ट लिट्टी चोखा !

अर्धांगिनी - श्री गौतम सिंह सहायक प्रबंधक (कंपनी सचिव) भुवनेश्वर



अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर में श्री अश्विनी वैष्णव, माननीय सदस्य राज्यसभा, डॉ. गीतांजलि बतमानबाने, निदेशक (एम्स, भु.) के साथ वृक्षारोपण करते हुए कंपनी के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री श्रीधर पात्र



हिंदी पखवाडा समारोह -2020 के अवसर पर कंपनी की हिंदी पत्रिका 'अक्षर' का विमोचन करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के साथ अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक महोदय



हिंदी दिवस 2020 के अवसर पर प्रतिभागी को सम्मानित करते हुए तत्कालीन कार्यपालक निदेशक (प्रद्रावक एवं विद्युत)

